ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

पवमान

(मासिक)

वर्ष : 34 चैत्र-बैशाख वि0स0 2079 अंक : 4 अप्रैल 2022

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून वजन: 50 ग्राम

सभी ऋषि भक्तों को आर्यसमाज स्थापना दिवस
एवं राम नवमी की हार्दिक शुभकामनायें

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद

अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

karix
connect · interact

Transforming the way businesses communicate & interact with their customers

Karix empowers organisations to enable smarter, relevant, and personalised conversations with their customers and create seamless customer experiences, across the globe. Purpose-built for enterprises, Karix offers a rich suite of communication channels with superior security standards, unmatched customer support and a reliable cloud-based platform to support all communication needs.

21+
years of industry experience with a stronghold in all major industries

2,000+
Enterprise customers

100+ BN
Omni-channel messages processed annually

24x7
Support provided by over 200 engineers

10,000+
Business processes supported

CUSTOMER ENGAGEMENT SOLUTIONS SUITE

- WhatsApp
- A2P Messaging
- Email
- RCS
- Voice
- Marketing Automation
- Campaign Automation
- Chatbots
- Live Agent Chat

WHY DO FORTUNE 1000 BUSINESSES PREFER KARIX?

- Best in class connectivity
- High available systems
- Hybrid cloud infrastructure
- Deep domain understanding

For more details, visit us at www.karix.com or write to us at marketing@karix.com

ओ3म्

पवमान

वर्ष–34 अंक–4

चैत्र–बैशाख 2079 विक्रमी अप्रैल 2022

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,123 दयानन्दाब्द : 198

★

–: संरक्षक :–
स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती
मो. : 9410102568

★

–: अध्यक्ष :–
श्री विजय कुमार
मो. : 9837444469

★

–: सचिव :–
प्रेम प्रकाश शर्मा
मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–
स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–
डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री
अवैतनिक
मो. : 9336225967

★

–: सहायक सम्पादक :–
अवैतनिक
मनमोहन कुमार आर्य–
मो. : 9412985121

★

–: कार्यालय :–
वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,
तपोवन मार्ग, देहरादून–248008
दूरभाष : 0135–2787001
मोबाईल : 7895978734 (श्री चन्दन सिंह)

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com
Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	डॉ. कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	आचार्य डॉ. रामनाथ वेदालंकार	3
परमात्मा ने इस विशाल ब्रह्मांड को बनाया है...	मनमोहन कुमार आर्य	4
प्रायश्चित		8
आर्यसमाज वेद प्रचारक, समाज सुधारक...	मनमोहन कुमार आर्य	11
ईश्वर से महान् कोई नहीं	डा कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री	14
मनुष्य को न अपने पूर्वजन्मों और न परजन्मों...	मनमोहन कुमार आर्य	19
श्री हनुमान जी बन्दर नहीं थे, उनका वशं...	राममुनि आर्य वानप्रस्थ	22
श्री चमनलाल रामपाल जी ने देश–धर्म की...	मनमोहन कुमार आर्य	25
नशा नाश की निशानी : शराब तथा धूम्रपान		28
पढ़िए, चिन्तन कीजिए, आचरण में उतारिए...	केवल सिंह आर्य	30
ऋषियों का संदेश		31
स्वस्थ–सुखी रहने के सूत्र	केवल सिंह आर्य	32

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. ''वैदिक साधन आश्रम''	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. ''पवमान''	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
3. 'तपोवन विद्या निकेतन''	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1.	कलर्ड फुल पेज	रु. 5000/– प्रति माह
2.	ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज	रु. 2000/– प्रति माह
3.	ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज	रु. 1000/– प्रति माह

सदस्यों के लिए पवमान पत्रिका के रेट्स

1.	वार्षिक मूल्य	रु. 200/– वार्षिक
2.	15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य	रु. 2000/–

नोटः पवमान पत्रिका फुटकर विक्रय के लिए उपलब्ध नहीं है।

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

प्रभु निष्ठा

मन की अडिग स्थिति और अप्रतिम विश्वास को हम निष्ठा कह सकते हैं। प्रत्येक स्थिति में दृढ़ रहना निष्ठा है। निष्ठा संपूर्ण मनोभाव से परमात्मा की स्वीकृति और सभी कार्यों से उसको ही हेतु मानना। यह उत्तम मनोभाव है, जो साधक को निश्चिंत बनाता है और उसमें अविचल विश्वास की प्रतिष्ठा करता है। जगत् एक बंधन रूप है। तथापि जगत् तृष्णा के मध्य परमात्मनिष्ठा को कर लेने पर जगत कार्यों में ईश्वरीय आभास होने लगता है। अहंता और ममता, जो मैं और मेरा इस रूप में है-यह तृष्णा रूप है। प्राय: हम सभी इसी से जीवन समाप्त कर देते हैं। सत्संग और सद्ग्रंथों के अध्ययन से ही परमात्म विचार सदृढ़ होता है। प्रभु निष्ठा जीवन को स्थिरता प्रदान करती है। मस्तिष्क में ईश्वरीय भाव होने पर सांसारिक कामों में भी कर्तव्यनिष्ठा का भाव आता है। कर्म फल भोगते हुए सुख-दु:ख की अनुभूति करते हुए हम निराश नहीं होते। यही परमात्मा की कृपा है कि उसका स्मरण बना रहे। ईश्वर जिस किसी स्थिति में रखे, उसे स्वीकार करें। निष्ठा द्वारा प्राप्त भक्ति में निरंतरता से ईश्वर उपासना में उत्तरोत्तर प्रगति होती है। हमें समायोजन और सामंजस्य के साथ रहना सीखना चाहिये। यही जीवन जीने की कला है। स्वयं में आस्था और विश्वास ऊर्जा का सृजन करता है और हमारे व्यक्तित्व को विकसित करता है। मनुष्य जो कर्म करता है उसके पीछे एक ही ध्येय होता है- मान सम्मान और प्रतिष्ठा अर्जित करना। किसी को लगता है कि धन से प्रतिष्ठा बढ़ती है, तो कोई प्रसिद्धि के पीछे भागता है। कोई सत्ता में सम्मान देखता है तो किसी भी कीमत पर सत्ता पाना चाहता है। किसी की अभिलाषा बड़े परिवार की होती है तो कोई स्वयं को बड़ा दानी, दयालु और परोपकारी सिद्ध करना चाहता है। मनुष्य जीवन भर इस चक्र में उलझा रहता है। इसे धन, सत्ता, शक्ति, नाम-शोहरत तो मिल जाती है, किंतु जिस प्रतिष्ठा की चाह होती है वह नहीं मिल पाती है। ऐसा मनुष्य सुख-शांति से दूर ही रहता है। सांसारिक उपलब्धियाँ उसे तनाव और समस्याएं अधिक देती हैं। उसे ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा का भी सदैव सामना करना पड़ता है। लोग उसका अहित करने का कोई भी अवसर नहीं छोड़ते। ऐसे में प्रतिष्ठा का भ्रम टूटता ही रहता है। किन्तु जिसकी चेतना में परमात्मा का स्थायी वास है, उसी की प्रतिष्ठा है। ऐसा व्यक्ति प्रत्येक जीव में परमात्मा का रूप देखता है और प्रत्येक जीव का आदर सम्मान करता है। वह किसी का भी अहित कर ही नहीं सकता है। जो मनुष्य किसी का अहित नहीं करता है, तो कोई भी उससे ईर्ष्या अथवा द्वेष नहीं रखता है। यदि मनुष्य परमात्मा से जुड़ा है उससे प्रतिस्पर्घा भी नहीं हो सकती है। जो मनुष्य परमात्मा से जुड़ जाता है, शनै:-शनै: परमात्मा के गुणों को धारण करने लगता है। परमात्मा की तरह वह भी सत् की सत्ता को स्वीकार करने वाला, कर्मशील, भयहीन, वैर-विरोध से परे, समष्टि रखने वाला, सर्वकल्याण की कामना करने वाला हो जाता है। उसके गुण परिलक्षित होने लगते हैं। ये गुण जितने स्थायी और दृढ़ होते जाते हैं मनुष्य उतना ही परमात्मा के निकट होता जाता है।

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

ओ३म्

वेदामृत

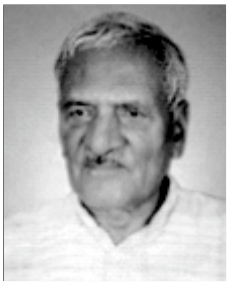

'पैतृक मित्रता का निर्वाह करो'

म नो अग्ने सख्या पित्र्याणी, प्र मर्षिष्ठा अभि विदुष्कविः सन्।
नभो न रूपं जरिमा मिनाति, पुरा तस्या अभिशस्तेरधीहि।।

ऋग्वेद 1.71.10

ऋषिः पराशरः शाक्त्यः। देवता अग्निः। छन्दः विराट् त्रिष्टुप्।

(अग्ने) हे तेजोमय परमेश्वर! (विदुः) सर्वज्ञ (कविः) क्रान्तदर्शी (सन्) होते हुए [आप] (नः) हमारी (पित्र्याणि) पैतृक (सख्या) मित्रताओं को (मा) मत (अभि प्र मर्षिष्ठाः) भूल जाओ। (नभः न) आकाश के समान (जरिमा) बुढ़ापा (रूपं) रूप को (मिनाति) नष्ट कर रहा है। (तस्या) उस (अभिशस्तेः) हिंसा से (पुरा) पहले (अधीहि) प्राप्त हो जाओ।

हे अग्निदेव! हे तेजोमय प्रभु! मेरे पिता में और तुममें जो अन्तरंग सख्य था, उसे क्या तुम भूल गये? मेरे पिता और तुम एक झूले में झूलते थे। तुम उनके थे, वे तुम्हारे थे। उन्हीं के पुत्र मेरे साथ तुम ऐसा वयवहार कर रहे हो, जैसे तुम्हारी कोई पूर्व-परिचिति है ही नहीं। पैतृक मित्रता का तो निर्वाह करो। तुम 'विदु' हो, सर्वज्ञ हो, तुमसे न किसी के मन की कोई बात छिपी है, न विश्व के किसी कोने की कोई बात छिपी है। तुम 'कवि' हो, क्रान्तदर्शी हो, भविष्य-द्रष्टा हो। किस बात का क्या परिणाम होगा, यह तुम अपनी सूक्ष्म दृष्टि से पहले ही देख लेते हो। भूत, वर्तमान, भविष्य कुछ भी तुमसे छिपा हुआ नहीं है। तो फिर मेरी पैतृक मैत्रियों को ही क्यों बिसारते हो? मेरे पिता के समान मुझे भी अपना अभिन्न सखा बनाकर उच्च पद प्राप्त करा दो।

मेर सद्गुणों का रूप-सौन्दर्य, मेरे आत्मबल का रूप-सौन्दर्य, मेरे मनोबल का रूप-सौन्दर्य, मेरी सचाई का रूप-सौन्दर्य, मेरी तपस्या का रूप-सौन्दर्य, मेरे शरीर का रूप-सौन्दर्य सब नष्ट हुआ जा रहा है। शरीर का बुढ़ापा तो जब आना होगा तब आयेगा, पर मन के बुढ़ापे ने मुझे पहले ही आत्माधीन कर लिया है। उससे मैं जर्जर हुआ जा रहा हूं। मैं स्वयं को निस्तेज, कान्तिहीन, हताश, रुग्ण अनुभव कर रहा हूं। जैसे आकाश क्षण-क्षण में अपने रूप को नष्ट और परिवर्तित करता रहता है, वैसे ही मेरा आकर्षक रूप नष्ट होता जा रहा है। अब तो मेरी हिंसा हो जाने में, मेरी नैतिक मौत हो जाने में, कुछ ही कसर बची है। हे अग्नि प्रभु! आते क्यों नहीं? क्या तुम तब आओगे जब मेरा सर्वनाश ही हो चुकेगा? हे देव! आओ, 'अभिशस्ति' से पहले ही दौड़कर आ जाओ और मेरा उद्धार करो। मैं तुम्हारा सखित्व पाने के लिए आकुल हो रहा हूं।

(पुस्तक वेद-मंजरी से साभार)

वैदिक साधन आश्रम तपोवन में 5 दिवसीय वृहद गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

परमात्मा ने इस विशाल ब्रह्मांड को बनाया हैः स्वामी चित्तेश्वरानन्द

- मनमोहन कुमार आर्य

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून में बुधवार दिनांक 9-3-2022 से आरम्भ होकर पांच दिनों तक चला गायत्री एवं चतुर्वेद शतकीय महायज्ञ रविवार दिनांक 13-3-2022 को आश्रम की पर्वतीय इकाई में सोल्लास सम्पन्न हुआ। यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती, पं. सूरतराम शर्मा, वैदिक विद्वान डा. वीरपाल जी, प्राकृतिक चिकित्सक स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती, महाशय पं. रुवेल सिह आर्य, आश्रम के प्रधान श्री विजय कुमार आर्य तथा मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी उपस्थित थे। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के अध्यक्ष डा. अनिल आर्य (दिल्ली) भी इस अवसर पर पधारे थे। आज का यज्ञ चार वृहद यज्ञ वेदियों में सम्पन्न किया गया। यज्ञ में लगभग 50 यजमानों ने श्रद्धान्वत होकर घृत एवं साकल्य की आहुतियां दी। पूर्णाहुति के पश्चात यज्ञ प्रार्थना हुई।

यज्ञ की पूर्णाहुति के प चात यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी ने सामूहिक प्रार्थना कराई। उन्होंने कहा कि हमारा यह यज्ञ परमात्मा को समर्पित है। स्वामी जी ने कहा कि परमात्मा उदार हैं। वह हम सबको भी उदार बनायें। परमात्मा ने इस विशाल ब्रह्माण्ड को बनाया है। परमात्मा ने ही भूमि को भी बनाया है। सृष्टि में परमात्मा ने असंख्य सूर्य बनाये हैं। परमात्मा की कृपा से ही हम सबको मनुष्य योनि प्राप्त हुई है। परमात्मा की कृपा से हम वेदपथ पर चल रहे हैं। हम सब परमात्मा के ऋणी हैं। स्वामी जी ने कहा कि परमात्मा हमारा मंगल कीजिए। स्वामी जी ने कहा कि परमात्मा ने ही सृष्टि के आरम्भ में हमारे आदि पूर्वजों को वेदों का ज्ञान दिया था। काल व्यतीत होने के साथ हम वेदों से विहीन हो गये थे।

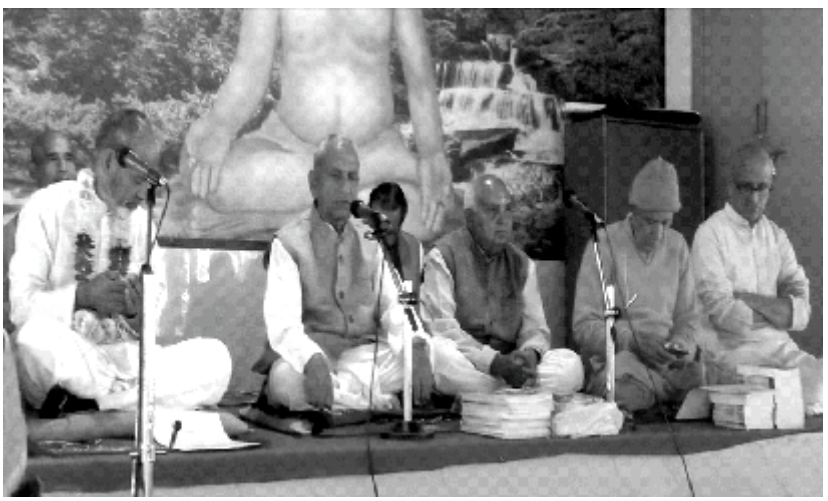

वेदविहीन होने से हमारा पतन हुआ। पतन के समय हमारा, हमारी माताओं व बहिनों का तिरस्कार तथा अपमान हुआ। हम उनके जीवन तथा सम्मान की रक्षा नहीं कर सके। परमात्मा ने 19वीं शताब्दी मे दयानन्द जी को इस भारत वर्ष देश में उत्पन्न किया जिन्होंने वेदों का ज्ञान कराकर हमें परमात्मा सहित अपने आप से

सही अर्थों में परिचित कराया। हम सब वेद के अनुयायी बने। हमने मिलजुल कर चलना आरम्भ किया। स्वामी जी ने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कोरोना महामारी का उल्लेख किया और प्रार्थना की कि ईश्वर इस महामारी को समूल नष्ट कर दें। स्वामी जी ने प्रधानमंत्री मोदी जी तथा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के देश और समाज हितकारी कार्यों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि दोनों सच्चे सन्तों की तरह से कार्य कर रहे हैं। ईश्वर उन्हें बार-बार विजय दिलायें। इन नेताओं के नेतृत्व में देश उन्नति कर रहा है। स्वामी जी ने प्रार्थना में कहा कि सबके घरों में सुख व शान्ति हो। जो मनुष्य रोग व अज्ञान आदि शत्रुओं से पीड़ित हैं, उनसे सभी दु:खों का निवारण हो। सबका कल्याण हो।

आश्रम के मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी ने कहा कि स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के आशीर्वाद से गायत्री महायज्ञ आज सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ है। उन्होंने बताया कि सन् 1945-1947 के मध्य आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान महात्मा आनन्द स्वामी जी ने इस आश्रम में रहकर तप किया था। महात्मा जी के आशीर्वाद से ही अमृतसर के बावा गुरमुख सिंह जी ने आश्रम के लिए 594 बीघा भूमि क्रय कर इस आश्रम का निर्माण कराया था। शर्मा जी ने कहा कि इस तपोभूमि में अनेक योगियों एवं महात्माओं ने तप किया है। अनेक तपस्वियों ने बताया है कि यहां कि भूमि उपासना व ध्यान की शीघ्र सफलता में सहायक है। शर्मा जी ने श्रोताओं को प्रेरणा की कि सब बन्धुओं को यहा साधना कर लाभ उठाना चाहिये। शर्मा जी ने कहा कि आप लोग अपनी सुविधानुसार समय निकाल कर यहां आकर साधना कर लाभान्वित हो सकते हैं। साधना व उपासना के लिए यह आदर्श स्थान है। यहां रहकर साधक यज्ञ, योगाभ्यास एवं मौन साधना कर सकते हैं। आश्रम के मंत्री श्री शर्मा जी ने आयोजन में उपस्थित स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती जी की प्रशंसा करते हुए बताया कि वह देश भर में शिविर लगाकर प्राकृतिक चिकित्सा का प्रचार करते हैं जिससे लोगों के साध्य व असाध्य रोग ठीक होते हैं। शर्मा जी ने श्रोताओं को प्रेरणा की कि हमें स्वामी योगे वरानन्द जी के ज्ञान व अनुभवों का लाभ उठाना चाहिये। शर्मा जी ने सभी से आर्थिक सहयोग की अपील भी की। मंत्री जी ने आश्रम द्वारा प्रकाशित अपनी मासिक पत्रिका 'पवमान' की जानकारी भी श्रोताओं को दी और इसका सदस्य बनने की प्रेरणा की।

श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी के सम्बोधन के बाद कार्यक्रम में उपस्थित 79 वषीर्य महाशय रुवेल सिंह आर्य जी ने तीन भजन प्रस्तुत किये। उनका गाया हुआ पहला स्वरचित भजन था 'आज से बस हम तुम्हारे हो गये। तुम से मिलकर हमारे वारे न्यारे हो गए।। कोई नजर अपना न आता था मुझे, सबसे ज्यादे आप हमें प्यारे हो गए।।'' भजनों की प्रस्तुति के बाद धर्माचार्य पं. सूरतराम शर्मा जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि अथर्ववेद के एक मन्त्र में बताया गया है कि हम भय, चन्ता एवं क्ले ा से कैसे मुक्त हों ? उन्होंने कहा कि मृत्यु का भय सबसे बड़ा क्लेश है। मृत्यु के भय से सामान्य व्यक्ति ही नहीं अपितु विद्वान भी चिन्तित रहते हैं। पंडित जी ने अपने पिता की मृत्यु के समय के दृश्य को भी श्रोताओं के सम्मुख उपस्थित किया। उन्होंने मृत्यु के क्लेश से आहत हुए बिना अपने प्राण त्यागे थे। पंडित सूरतराम शर्मा जी ने आगे कहा कि मनुष्य आसक्ति के कारण मृत्यु के समय दु:खी होता है। मृत्यु किसी को तड़पाती या भयभीत नहीं करती अपितु आसक्ति के कारण ऐसा होता है। मृत्यु के भय से मुक्त होने के लिए हमें परम सत्ता परमात्मा को जानना होगा। जो मनुष्य परमात्मा को जान लेता है वह मृत्यु के दु:ख से मुक्त हो जाता है। शर्मा जी ने बताया कि सृष्टि की रचना परमात्मा ने अपने किसी प्रयोजन के लिए नहीं अपितु

जीवों के हित के लिए की है। आसक्ति हमें दु:ख देती है। हमें भी अकाम परमात्मा की तरह कामनाओं से रहित होना होगा। पंडित जी ने कहा कि परमात्मा धैर्यवान है। धैर्यवान मनुष्य बड़े से बड़े कष्टों को सहन कर लेता है। परमात्मा के समान जीवात्मा भी अमृत अर्थात् अविनाशी हैं। परमात्मा को यदि हम जान लेंगे तो हम भी भयभीत नहीं होंगे। शर्मा जी ने यह भी कहा कि परमात्मा स्वयंभू है। परमात्मा सृक्टि में सर्वत्र अपनी निज सत्ता से विराजमान है। सभी भयों व क्लेशों से मुक्त होने के लिए हमें वेदों का अध्ययन करने सहित परमात्मा के गुणों को भी जानना होगा। शर्मा जी के इस व्याख्यान के बाद माता नीलम शर्मा जी का एक भजन हुआ। उनके भजन के बोल थे 'प्रभु प्रकाश दो स्वच्छ दृष्टि दो हे जगत के अन्तर्यामी।'

स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि परमात्मा असीम है। सृष्टि में असंख्य सूर्य हैं। सृष्टि के आरम्भ से मनुष्य वेदानुसार एवं वेदानुकूल जीवन जीते आये हैं। जब तक लोग कच्चे घरों में रहते थे वे पक्के होते थे। वर्तमान समय में हमारा प्राचीन व प्राकृतिक जीवन हमसे दूर हो गया है। पहले लोग प्राकृतिक जीवन जिया करते थे। स्वामी जी ने कहा कि यदि हम प्राकृतिक जीवन की ओर नहीं लौटे तो हमारे मस्तिष्क में बहुत कुछ बदल जायेगा अर्थात् यह विकृत हो जायेगा जहां से लौटने में हमें वर्षो लगेंगे। स्वामी जी ने कहा कि युवा पीढ़ी का पालन पोषण वैदिक नियमों के अनुसार नहीं हो रहा है। बच्चे रात्रि को जागते हैं और प्रात: 5.00 बजे सोते हैं और फिर दिन के 12.00 बजे जागते हैं। मां बाप को डर रहता है कि डांटने पर बच्चे कहीं आत्महत्या न कर लें। उन्होंने कहा कि छोटे-छोटे बच्चे असाध्य रोगों तथा डिप्रेशन से ग्रस्त हैं। हमें बच्चों के निर्माण का कार्य करना होगा। स्वामी जी ने मोदी जी के गुणों व कार्यो का उल्लेख कर उन्हें भी एक संन्यासी व सन्त की संज्ञा दी। स्वामी जी ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के कार्यों की भी प्रशंसा की। स्वामी जी ने युवा पीढ़ी में आये अनेक दोषों की चर्चा की और इस पर दु:ख व्यक्त किया तथा उसके उपाय भी लोगों को बतायें। स्वामी जी ने हिन्दुओं की घट रही जन्मदर पर भी चिन्ता व्यक्त की। स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती जी ने कहा कि हमें देश के साधुओं को संगठित करना है। उन्होंने स्वयं 500 साधुओं को संगठित कर उनसे देश व समाज के हित का कार्य कराने का संकल्प लिया। उन्होंने कहा कि माता पिताओं को अपने बच्चों को वेदों और उनके सिद्धान्तों से परिचित करना चाहिये। स्वामीजी के बाद दिल्ली से पधारी ऋषिभक्त बहिन प्रणीण आर्या जी ने एक भजन प्रस्तुत किया जिसके बोल थे 'मेरे दाता के दरबार में सब लोगों का खाता, जो कोई जैसी करनी करता वैसा ही फल पाता'। भजन अत्यन्त मधुर एवं प्रेरक था।

केन्द्रीय आर्य युवा परिषद, दिल्ली के केन्द्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य जी ने कहा कि देश व समाज जाग जाता है जब देश के युवाओं की जवानी जाग जाती है। श्री अनिल आर्य जी ने आश्रम के पूर्वप्रधान श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री जी को स्मरण किया और उनके कार्यों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि आज यहां पहुंच उन्हें उनकी कमी याद आ रही है। डा. अनिल आर्य जी ने परिषद के आगामी युवा चरित्र निर्माण शिविरों की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आगामी शिविर कोटद्वार के कण्वाश्रम में आयोजित किया जा रहा है। इस शिविर में 150 युवक भाग लेंगे जिसमें इन 6-12 कक्षाओं के युवकों को चरित्र निर्माण सहित लाठी, तलवार तथा आत्म रक्षा की शिक्षा भी दी जायेगी। डा. अनिल आर्य जी ने श्रोताओं को कहा कि आप अपने बच्चों को हमारे शिविरों में भेंजे। उन्होंने कहा कि यदि देश के युवा जाग जायेंगे तो देश जाग

जायेगा। उन्होंने बताया कि परिषद का एक शिविर जम्मू में 12 जून से लगेगा। आश्रम के मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी ने डा. अनिल आर्य की कर्मठता की प्रशंसा की और कहा कि आप तन, मन व धन से सहयोग कर डा. अनलि आर्य जी के कार्यक्रमों को सफल बनाये। इसके पश्चात एक श्रोता माता स्नेहलता जी ने भक्ति भाव में भरकर एक भजन गाया जिसके बोल थे 'केवल एक ओ३म् नाम सबका सहारा है, ओ३म् नाम प्यारा है जी ओ३म् नाम प्यारा है।।' कार्यक्रम को देहरादून जनपदीय सभा के प्रधान तथा प्रदेश की प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री शत्रुघ्न मौर्य जी ने भी सम्बोधित किया।

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी ने आपने आशीर्वचनों में कहा कि मनुष्य का मन ही बन्धन=दु:खों और मोक्ष का कारण है। परमात्मा मनुष्य को उसके कर्मों के अनुसार एक योनि के शरीर से निकाल कर दूसरी योनि के शरीर में प्रविष्ट करा देता है। हमारी सृष्टि प्रवाह से अनादि है। हम पर परमात्मा सदा से इस संसार व ब्रह्माण्ड में हैं। हमारा आत्मा किसी भौतिक पदार्थ से बना हुआ नहीं है। यह चेतन एवं अपरिणामी पदार्थ है। यह सदा से है और अविनाशी है। परमात्मा में आकार व रूप-रंग नहीं है। परमात्मा सर्वज्ञ है और जीव अल्पज्ञ है। स्वामी जी ने कहा कि वैज्ञानिकों के अनुसार हमारी आकाश गंगा में 100 खरब से भी अधिक सूरज हैं। वैज्ञानिकों ने कहा है कि इससे अधिक सूर्यों को हमारे यन्त्र देखने में असमर्थ हैं। स्वामी जी ने बताया कि परमात्मा को अपने लिये सृष्टि की रचना करने के लिए आवश्यकता नहीं थी। हमारी आत्मा का कभी जन्म नहीं हुआ और न इसकी कभी मृत्यु होगी। परमात्मा हमारे साथ हर क्षण रहता है। हमें याद रखना चाहिये कि कुछ समय बाद हमें संसार से जाना होगा। संसार की वस्तुएं सदा के लिए हमारे साथ रहने वाली नहीं है। हमें ध्यान रखना चाहिये कि हमसे कोई पाप व भूल न हो। हम अन्याय न करें अपितु सत्य का आचरण करे। सत्य का आचरण ही सत्य धर्म है। हमें क्लेशों वा दु:खों से छूटना है। हम आत्मा हैं शरीर नहीं है। शरीर के लिए हम अपनी आत्मा की उपेक्षा न करें। हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि परमात्मा हमारे सभी कर्मों को देख रहा है और हमारे सभी अशुभ कर्मों का हमें अवश्यमेव दण्ड देगा। हम अशुभ कर्म करना तत्काल छोड़ दें। हमें प्रात: व सायं परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ना है। हमें परमात्मा का ध्यान करना है। हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि परमात्मा हमें उपासना के पथ पर ले चलें और हमें अपने सत्यस्वरूप के दर्शन करायें।

स्वामी जी के सम्बोधन के पश्चात शिविर में पधारी एक माता जी ने शिविर में हुए अपने लाभों का वर्णन श्रोताओं को सुनाया। वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के प्रधान श्री विजय कुमार आर्य जी ने स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी सहित सभी यजमानों एवं यज्ञ में सहयोग करने वाले एवं आयोजन में उपस्थित सभी बन्धुओं का धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसके बाद सभी बन्धुओं ने भूमि पर नीचे बैठकर परस्पर मिलकर भोजन किया। इस यज्ञ में जो जो लोग सम्मिलित हुए तथा जिन स्थानीय लोगों ने रविवार को आकर पूर्णाहुति में भाग लिया, वह आश्रम परिसर के शुभ, शीतल एवं शान्त वातावरण से प्रभावित हुए। जो व्यक्ति भी इस स्थान पर एक बार आता है वह यहां बार-बार आना चाहता है, यह इस स्थान की विशेषता है। हम विगत 50 वर्षो से यहां आते रहे हैं और पुन: आने की उत्सुकता बनी रहती है।

प्रायश्चित

मनुस्मृति में कहा गया है–प्रायो नाम तपः प्रोक्तं चित्तं निश्चय उच्यते। तपो निश्चयसंयुक्तं प्रायश्चित्तं तदुच्यते।। प्रायः तप को कहते हैं और चित्त का अर्थ निश्चय है। तप और निश्चय का संयुक्त होना ही प्रायश्चित कहलाता है। पापवृत्ति का निवारण अथवा तप का निश्चय प्रायश्चित कहलाता है। जो पतन की ओर ले जाये उसे पाप कहते अथवा जिससे लोग बचना चाहते हैं वह भी पाप कर्म होता है। इसके दश प्रकार हैं

हिंसास्तेयान्यथा कामं पैशुन्यं परुषानृते।
सं भिन्नालापव्यापाद्यमभिध्या ग्विपर्ययः।
पाप कर्मेतिदशधा कायवाङ्मान सांस्त्यजेत्।।
(वाग्भट)

अर्थात् हिंसा, चोरी, व्यभिचार तीन शारीरिक पाप हैं। चुगली करना, कठोर बोलना, असत्य भाषण और असम्ब (बक–बक करना) बोलना ये चार वाणी के पाप हैं। मन में किसी के मारने का अनिष्ट चिन्तन, दूसरे के धन को अपहरण करने का विचार और नास्तिकता ये तीन मन के पाप हैं। पापों की श्रृंखला बहुत लम्बी है। संक्षेप में महापातक और उपपातकों की गणना करना ही पर्याप्त होगा।

ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वगंनागमः।
महान्ति पातकान्याहुः संसर्गश्चापि तैः सह।।
(मनु.११/५४)

ब्रह्महत्या, मदिरापान, चोरी करना और गुरु की पत्नी से व्यभिचार इनको महापातक कहते हैं। इन महापातकियों के साथ सम्पर्क रखना भी इसी श्रेणी में आता है।

उपपातक–गाय का मारना, परस्त्री गमन, आत्मा को बेचना (आत्मा के विरुद्ध आचरण), पंच महायज्ञों का त्याग, व्रत भंग करना, यथा समय यज्ञोपवीत संस्कार न होना, तालाब, बगीचा, स्त्री, सन्तान को बेचना, सुवर्णादि सम्पूर्ण खानों को अपने अधिकार में लेना, बड़े–बड़े कल कारखाने लगाना, औषधियों को काटना, अपनी स्त्रियों से वेश्यावृत्ति कराना, ईधन के लिये हरे वृक्षों को काटना, निन्दित अन्न का भक्षण करना, अग्नि होत्र न करना, ऋणों का न चुकाना, हिंसा एवं नास्तिकता आदि उपपातक है।

पाप क्या है और उसकी निवृत्ति किस प्रकार सकती है, इसे जानना बहुत आवश्यक है। जिस प्रकार एक लकड़ी को मोड़ते रहने से वह तिरछी हो जाती है और सीधी लकड़ी से करने योग्य कर्मो के योग्य नहीं रहती उसी प्रकार आत्मा भी दूसरों का अपकार करने से मलिन हो जाता है और वह शुभ फलों के योग्य नहीं रहता। जैसे किसी स्वच्छ श्वेत वस्त्र पर दाग लग जाने पर वह बदरंग हो जाता है वैसे ही विचित्र कर्मो के करने से विचित्र अवस्था को प्राप्त हो जाता है और उस अवस्था के अनुसार फल प्राप्त होता है। पाप कर्मो से आत्मा में वासना, विषमता या मलिनता उत्पन्न हो जाती है। उसको दूर करने का उपाय दण्ड भोग है। इसके दो प्रकार हैं। एक राजा या ईश्वर की व्यवस्था से परवश होकर भोगना और दूसरा उपाय अपने आप ही यह समझ कर कि मैंने यह बुरा किया है जिससे मेरी आत्मा में पाप भावना आ गई है। आत्मा से अभिप्राय अन्तःकरण अर्थात् मन, बुद्धि सहित आत्मा जानना चाहिये।

पाप करने वाला विद्वान् लोगों से कहे कि मैंने यह पाप किया है। इससे मेरा आत्मा व्यथित हो रहा है।

इसकी निवृत्ति का उपाय बताइये। विद्वान् लोग देश, काल एवं अवस्था का विचार करके शास्त्रानुसार या शास्त्र में न कहा हो तो शास्त्र सम्मत प्रायश्चित बतलायें और वह श्रद्धा, नम्रता और पश्चाताप से युक्त प्रायश्चित करे और आगे फिर पाप न करने का संकल्प करे। यहाँ इस बात का स्पष्टीकरण करना बहुत आवश्यक है कि प्रायश्चित करने से पाप क्षमा नहीं होते। उनका फल तो ईश्वराधीन है। प्रायश्चित से व्यक्ति आगे पाप करने से रुक जाये. यही इसका उद्देश्य है। राजदण्ड का भी यही अभिप्राय है कि जिसे दण्ड दिया गया है वह यह अनुभव करे कि मैंने यह कर्म अच्छा नहीं किया जिसके कारण मुझे शारीरिक यातना और सामाजिक अपमान सहन करना पड़ रहा है। इसके अतिरिक्त पीड़ित व्यक्तियों को भी आत्मसन्तोष मिले और वे निश्चिन्त हो जायें। पाप का फल दण्ड रूप में राज्य की ओर से या समाज द्वारा मिले अथवा अपराधी स्वयं ही अपने अपराध को स्वीकार करके स्वयं उसका प्रायश्चित्त करे इन दोनों में कौन सी व्यवस्था उचित है इसका निर्णय व्यक्ति की प्रकृति को देखकर ही किया जाना चाहिये।

ईश्वरीय दण्ड व्यवस्था इस जन्म और पूर्वजन्म के कष्ट आचरणों के अनुसार दण्डित करती है। जिससे शिक्षा प्राप्त करके व्यक्ति को स्वयं ही दुराचरण से पृथक् हो जाना चाहिये। बिना प्रायश्चित करने वाले निन्दित लक्षणों से युक्त उत्पन्न होते हैं इसी कारण आत्मशुद्धि के लिये प्रायश्चित अवश्य करना चाहिये।

सबके सामने अपने दोष को स्वीकार करने और उसके लिये खेद प्रकट करने, व्रतों का अनुष्ठान, वेदाभ्यास से पाप करने वाला पाप भावना से मुक्त हो जाता है। इसी भाँति आपत्ति के समय किये पाप कर्म की निवृत्ति दान देने से हो जाती है। सबसे अच्छा उपाय यह है कि व्यक्ति द्वारा पाप हो जाने की स्थिति में वह सबके सामने अपनी भूल स्वीकार करे और आगे फिर ऐसा कर्म न करने की प्रतिज्ञा करें तो सांप की केचुली के समान उसके पाप के संस्कार हटने लगते हैं। पाप कर्म वाला स्वयं अपने आप को धिक्कारे और मन में अपने आप से कहे मैंने जो किया है वह अच्छा नहीं किया में आगे से ऐसा कदापि नहीं करूंगा। मेरे किये हुये कर्मो का फल अवश्य ही मिलेगा। मैं लोगों की दृष्टि से चाहे बच जांऊ परन्तु उस सर्वनियन्ता की दृष्टि से बच नहीं सकता हे परमेश्वर दुरितानि परासुव मेरे सारे दुर्गुण और दुरव्यसनों को दूर कर दीजिये तथा यद् भद्रं तन्न आसव जिसने उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव है उन्हें मुझमें धारण कीजिये प्रार्थना में बहुत शक्ति है। यदि सच्चे हृदय से प्रार्थना की जाये तो उसका फल अवश्य मिलता है।

वेदाभ्यासो न्वहं शक्त्या महायज्ञ क्रिया क्षमा।
नाशयन्त्याशु पापानि महापातक जान्यपि
(मनु. ११/२४५)

प्रतिदिन वेद का स्वाध्याय, पांच महायज्ञों का अनुष्ठान, तप, सहिष्णुता ये क्रियायें बड़े पापों से उत्पन्न दुर्भावना एवं दुष्ट संस्कारों को भी नष्ट कर देती हैं। जैसे अग्नि अपने तेज से समीप में स्थित काष्ठों को जलाकर भस्म कर देती है वैसे ही वेद का ज्ञाता वेद ज्ञान रूपी अग्नि से सब पाप भावनाओं के संस्कारों को भस्मसात् कर देता है। जैसे मिट्टी का ढेला किसी बड़े तालाब में गिरकर पिंघल कर नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार ज्ञान, कर्म, उपासना वाले वेदों के ज्ञान में सब दुर्गुण और दुर्व्यसन डूब कर समाप्त हो जाते हैं।

सावित्रीमप्यधीयीत शुचौ देशे मिताशनः ।
अहिंसको मन्दको जल्पो मुच्यते सर्व किल्विषैः।।
(महा.शा.३५/३७)

जो पवित्र स्थान में मित भोजन करता हुआ हिंसा का सर्वथा त्याग करके राग-द्वेष, मान-अपमान आदि से रहित होकर गायत्री मन्त्र का जप करता है वह

सब पापों से मुक्त हो जाता है।

शुभाशुभफलं प्रेत्य लभते भूतसाक्षिकम्।
अतिरिच्येत यो यत्र तत्कर्ता लभते फलम।।

(महा.शा.३५/४द्द)

मनुष्य जो शुभ और अशुभ कर्म करता है उसके साक्षी पाँच महाभूत होते हैं। उन शुभ और अशुभ कर्मो का फल मृत्यु के पश्चात् उसे प्राप्त होता है। उन दोनों प्रकार के कर्मों में जो अधिक होता है उसी का फल कर्ता को मिलता है। व्यक्ति जो भी कर्म करता है, उसकी दो ढेरिया बनती जाती है। पाप कर्मो की एक तथा पुण्य कर्मो की दूसरी इनमें पूर्वजन्मों के किये कर्म भी मिलते जाते हैं। मृत्यु के समय जो ढेरी बड़ी होगी उसी के अनुसार अगला जन्म मिलेगा। इसलिये पाप कर्मो के फल को मन्द करने के लिये पुण्य कर्मो की मात्रा अधिक होने पर वे दब जाते हैं अथवा आटे में नमक के समान सुख-दु:ख रूप फल प्राप्त होता रहता है। इस प्रकार शास्त्रोक्त विधि से प्रायश्चित्त करके सभी पाप भाव दूर किये जा सकते हैं परन्तु जिसमें दम्भ और द्वेष की प्रधानता है उन नास्तिक और श्रद्धाहीन पुरुषों के लिये ऐसे प्रायश्चित्त का कोई महत्त्व नहीं है।

प्रायश्चित्त का सम्बन्ध नित्य, नैमित्तिक एवं काम्य तीनों कर्मो से है, और प्रायश्चित्त स्वयं में भी नित्य, नैमित्तिक व काम्य कर्म का स्वरूप ग्रहण कर लेता है, जब इसका उपयोग उक्त कर्मोत्पन्न पाप, अपराध से उपरति प्राप्त करने के लिए किया जाता है। तब इसका कर्मत्रय से सम्बन्ध होने तथा इन्हीं के निमित्त प्रायश्चित का उपयोग होने के कारण इसे त्रिवृत भी कहा जा सकता है। नित्य कर्मो के करने में किसी पुण्य की प्राप्ति नहीं होती, अपितु न करने से पाप वृद्धि अवश्यम्भावी है, इसलिए नित्यकर्म अवश्य करणीय होते हैं। प्रतिदिन अनजाने में होने वाले अपराधों का शमन करने के लिए नित्य कर्मो का विधान है। महर्षि मनु ने नित्य कर्म सम्बन्धित व्यवस्था देते हुए कहा है कि गृहस्थों से चूल्हा, चक्की, झाड़ू-बुहारी, ओखली मूसल और जलकलश इन पाँचों स्थानों में अनजाने में हिंसात्मक अपराध होता रहता है। मानव अपने लिए वस्तुओं के दैनिक उपयोग में लाने के कारण पाप से सम्बद्ध होता रहता है। क्रमश: उक्त पंच बध स्थानों में होने वाले पापों से छुटकारा पाने के निमित्त, गृहस्थों को प्रतिदिन पंचयज्ञ का कर्तव्य सर्वथा अपेक्षित बताया है। अध्ययन, अध्यापन, चिन्तन, सन्ध्यादि को ब्रह्मयज्ञ, वृद्धों की सेवा-तर्पण को पितृयज्ञ, अग्नि को दी जाने वाली हवि को अग्निहोत्र या देवयज्ञ, प्राणियों को दी जाने वाली भोज्य सामग्री या बलि को बलिवैश्यदेव यज्ञ या भूत-यज्ञ और अतिथि सत्कार के लिए अतिथि यज्ञ कहा जाता है। इस प्रकार इन पंचमहायज्ञों की यथाशक्ति परित्याग न करे तो गृहस्थ उक्त पंचस्त्रीय अपराधों से लिप्त नहीं होता। प्रायश्चित विवेककार के मत में, जो अपराध हो गया है, उसका शमन करना आवश्यक है अत: पापक्षय के लिए प्रायश्चित नैमित्तिक कर्म है। चूंकि पापवृत्ति का निवारण अथवा तप का निश्चय प्रायश्चित कहलाता है।

प्रायश्चित ब्राह्मण के लिये चतुष्पाद अर्थात् उसे सम्पूर्ण विधि से प्रायश्चित करना चाहिये क्योंकि ब्राह्मण धर्म के रक्षक हैं। क्षत्रिय को तीन चौथाई, वैश्य को आधा और शूद्र को चतुर्थांश ही प्रायश्चित्त करना पर्याप्त है। इसलिये शास्त्रों के अनुसार प्रायश्चित करना एक आवश्यक कर्तव्य है।

आर्यसमाज वेद प्रचारक, समाज सुधारक एवं प्राणी मात्र की हितकारी संस्था व आन्दोलन है

- मनमोहन कुमार आर्य

आर्यसमाज ऋषि दयानन्द द्वारा चैत्र शुक्ल पंचमी तदनुसार 10 अप्रैल, सन् 1875 को मुम्बई में स्थापित एक धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रवादी एवं वैदिक राजधर्म की प्रचारक संस्था वा आन्दोलन है। ऋषि दयानन्द को आर्यसमाज की स्थापना इसलिए करनी पड़ी थी क्योंकि उनके समय में सृष्टि के आदिकाल में ईश्वर से प्रादुर्भूत सत्य सनातन वैदिक धर्म पराभव की ओर अग्रसर था। यदि ऋषि दयानन्द आर्यसमाज की स्थापना कर वेद प्रचार न करते और सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि एवं आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों की रचना न करते, तो सम्भव था कि वैदिक धर्म विलुप्त होकर इतिहास की एक स्मरणीय वस्तु मात्र बन जाता। महाभारत व ऋषि दयानन्द के जीवनकाल के मध्य ऐसा कोई मनुष्य नहीं हुआ जिसे वेदों के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान रहा हो। देश में वेदों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त ऋषियों की परम्परा महाभारत के कुछ समय बाद जैमिनी ऋषि पर समाप्त हो चुकी थी। ऋषि दयानन्द के समय देश का वातावरण अत्यन्त निराशाजनक था। वैदिक धर्म को लोग भूल चुके थे। वैदिक धर्म अन्धविश्वासों, सामाजिक विषमताओं एवं कुरीतियों से युक्त था जिसका आधार अविद्यायुक्त मिथ्या ग्रन्थ यथा 18 पुराण, रामचरितमानस, प्रक्षिप्त मनुस्मृति, प्रक्षिप्त रामायण एवं महाभारत आदि ग्रन्थ थे। पुराण एवं रामचरित मानस अवतारवाद की वेद विरुद्ध मिथ्या मान्यता के पोषक थे व हैं। लगभग ढाई सहस्र वर्ष पूर्व बौद्ध एवं जैन मतों का प्रादुर्भाव हुआ जो नास्तिक मत थे। इन मतों के अनुयायी ईश्वर के अनादि, नित्य, अजन्मा, सनातन, सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ तथा निराकार अस्तित्व को नहीं मानते थे। यह अपने आचार्यों महात्मा बुद्ध एवं महावीर स्वामी के मत व मान्यताओं के अनुयायी थे व इन्हीं को ईश्वर के समकक्ष मानकर उनकी मूर्तियों की पूजा करते थे। मूर्तिपूजा का आरम्भ इन्हीं मतों से हुआ है। स्वामी शंकराचार्य ने इन मतों का खण्डन कर इनको पराजित किया और एक नये मत अद्वैतवाद व नवीन वेदान्त का प्रचार किया। यह मत वेदानुकूल न होकर ईश्वर के सर्वव्यापक वैदिक स्वरूप में स्थान-स्थान पर अविद्या की कल्पना कर उसे अविद्या से ग्रस्त बतातें हैं। वेदों के शीर्ष विद्वान व ऋषि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आचार्य शंकर के मत का युक्ति व प्रमाणों से खण्डन किया है। ऋषि दयानन्द के बाद स्वामी विद्यानन्द सरस्वती तथा पं. राजवीर शास्त्री सहित अनेक विद्वानों ने भी स्वामी शंकर के मत की समालोचना करते हुए उनके अद्वैतवाद के सिद्धान्तों को अवैदिक व अव्यवहारिक सिद्ध किया है।

स्वामी शंकर के बाद अनेक अवैदिक मत अस्तित्व में आये। विदेशों में भी ईसाई एवं इस्लाम मत का आविर्भाव हुआ। यह सभी मत सनातन वेद, उनकी सत्य एवं निर्भ्रान्त शिक्षाओं व मान्यताओं से परिचित नहीं थे। इन सभी मतों में वेद विरुद्ध सहित ज्ञान-विज्ञान व युक्ति विरुद्ध मान्यतायें पाई जाती हैं। ऋषि दयानन्द ने इन सभी मतों का अध्ययन किया और वैदिक मान्यताओं एवं सिद्धान्तों के आधार पर सभी मतों की समालोचना करते हुए उनमें विद्यमान अविद्यायुक्त मान्यताओं का सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के उत्तरार्द्ध के चार समुल्लासों में उल्लेख किया है। इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि ऋषि दयानन्द ने वेदमत को सत्य, ज्ञान एवं विज्ञान से युक्त पाये जाने के कारण ही स्वीकार किया और इससे सभी मनुष्यों को लाभान्वित करने के लिये इसका

देश-देशान्तर में अपने मौखिक प्रवचनों व ग्रन्थों के द्वारा प्रचार किया।

वैदिक धर्म में सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त ईश्वर, जीव व प्रकृति के यथार्थस्वरूप का ज्ञान है। चार वेद एवं वैदिक ऋषियों के ग्रन्थों द र्शन तथा उपनषिद आदि में ईश्वर, जीव व प्रकृति का जो स्वरूप मिलता है वैसा संसार के किसी मत व पन्थ के ग्रन्थ में प्राप्त नहीं होता। हम ऋषि दयानन्द द्वारा आर्यसमाज के दूसरे नियम में वर्णित ईश्वर के स्वरूप का यथावत् उल्लेख कर रहे हैं। वह लिखते हैं ''ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी (ईश्वर) की उपासना करनी योग्य (आवश्यक एवं उचित) है।'' ई श्वर सर्वज्ञ है। वह जीवों को उनके कर्मों का सुख व दु:ख रूपी फल अनेक जन्मों व अनेक योनियों में देकर उन कर्मों का भोग कराता है। ईश्वर ही जीवात्मा को उसके कर्मानुसार जन्म व सुख-दु:ख आदि भोगों की व्यवस्था करता है। ईश्वर मनुष्य की आत्मा सहित उसके हृदय एवं अंग-प्रत्यंग में व्यापक है। वह हमारी आत्मा में प्रेरणा भी करता है। मनुष्य जब ईश्वरोपासना, परोपकार अथवा कोई अच्छा काम करता है तो उसकी आत्मा में सुख, आनन्द व उत्साह उत्पन्न होता है और जब कोई अशुभ व बुरा काम करता व करने का विचार करता है तो उसकी आत्मा में भय, शंका व लज्जा आदि उत्पन्न होते हैं। यह आनन्द व सुख तथा भय, शंका व लज्जा आदि ईश्वर द्वारा अनुभव कराये जाते हैं। ईश्वर का स्वरूप जान लेने पर मनुष्य का कर्तव्य होता है कि सर्वोपकारी ईश्वर से हमें जो सुख व सुविधायें प्राप्त हुई हैं, उसका प्रतिदान हम उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना को करके करें। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो हम कृतघ्न होंगे। ऐसा न करने पर हम ईश्वर के आनन्द व अपनी आत्मा सहित ईश्वर के साक्षात्कार से भी वंचित रहेंगे। इस ईश्वर साक्षात्कार से मनुष्य को अनेक लाभ होते हैं। इससे धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति होती है। मोक्ष का अर्थ जन्म व मृत्यु के बन्धन से छूटना होता है। मोक्ष प्राप्त कर लेने पर मनुष्य कर्मानुसार मिलने वाले जन्मों से बहुत लम्बी अवधि के लिये मुक्त हो जाता है। जन्म नहीं होता तो मृत्यु भी नहीं होती। ऐसी अवस्था में जीवात्मा ईश्वर के सान्निध्य में रहकर ई वरीय आनन्द से युक्त रहता है जिसे किसी प्रकार का किंचित भी दु:ख नहीं होता। यही मनुष्य व जीवात्मा का प्रमुख व श्रेष्ठ लक्ष्य है। अनुमान कर सकते हैं कि हमारे ऋषियों व मुनियों को मोक्ष प्राप्त हुआ करता था। ऋषि दयानन्द में जो ज्ञान था तथा उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान वेद के प्रचार के लिये जो पुरुषार्थ किया, उससे अनुमान होता है कि उन्हें भी मोक्ष की प्राप्ति हुई होगी। मोक्ष के स्वरूप व उसकी प्राप्ति की विधि को जानने के लिये सत्यार्थप्रकाश का नवम् समुल्लास पठनीय है। पूरा सत्यार्थप्रकाश पढ़कर और सत्याचरण करके मनुष्य मोक्ष प्राप्ति के मार्ग में आगे बढ़ सकता है।

आर्यसमाज वेद विहित पंचमहायज्ञों की प्रचारक संस्था है। यह पंचमहायज्ञ हैं, सन्ध्या वा ईश्वरोपासना, दैनिक अग्निहोत्र, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ एवं बलिवैश्वदेव-यज्ञ। यह पांचों यज्ञ दैनन्दिन करने होते हैं। इसे करने से अनेक लाभ होते हैं। आर्यसमाज मत-मतान्तरों की अविद्यायुक्त असत्य मान्यताओं का खण्डन भी करती है। इसका कारण लोगों को असत्य व अज्ञानपूर्ण कार्यों को करने से रोकना एवं सत्य कर्मों सहित ई वर की उपासना में प्रवृत्त कर उन्हें पापों व उनके दु:खरूपी फलों व भोगों से बचाना है। आर्यसमाज समाज-सुधारक संस्था व आन्दोलन भी है। समाज में अनेक कुरीतियां एवं मिथ्या परम्परायें हैं जिन्हें दूर करना आवश्यक है। जड़-मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, बालविवाह, बेमेल विवाह, जन्मना-जातिवाद, ऊंच-नीच आदि भेदभाव को आर्यसमाज निषिद्ध बताती है। इसके स्थान पर वैदिक विधानों की महत्ता बताकर आर्यसमाज उन्हें आचरण में लाने का प्रचार करती है। मनुष्य का आचरण वेदानुकूल ही होना चाहिये तभी वह मनुष्य जीवन के उद्देश्य व लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। आर्यसमाज गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित वर्णव्यवस्था की पोषक है। आर्यसमाज की दृष्टि में न केवल मनुष्य

अपितु सभी जीव योनियां परमात्मा की सन्तानें हैं। सभी योनियों के प्राणी हमारे भाई व बन्धु हैं तथा ईश्वर हम सब का माता व पिता है। उन सबके प्रति हमारे भीतर सद्भाव व उपकार की भावना होनी चाहिये। मांसाहार को आर्यसमाज मनुश्यों के लिये निषिद्ध सिद्ध करता है। मांसाहार बहुत बड़ा पाप है जिसका फल ईश्वर से महादु:ख के रूप में प्राप्त होता है। मदिरापान भी मनुष्य व उसकी आत्मा की उन्नति में बाधक एवं हानिकारक है। आर्यसमाज ब्रह्मचर्य व्रत के पालन का भी पक्षधर है। वह भ्रष्टाचार व लोभ से युक्त परिग्रह की प्रवृत्ति को मनुक्ष्य के पतन का कारण मानता है। आर्यसमाज वेद एवं ऋषियों के ग्रन्थों के स्वाध्याय को अधिक महत्व देता है जिससे मनुष्य की शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति होने के साथ अविद्या का नाश तथा विद्या की वृद्धि होती है। ऐसा मनुष्य विद्वान, निरोग, सुखी एवं दीर्घायु होता है और मृत्यु के बाद उसकी उत्तम गति अर्थात् मनुष्य योनि में उत्तम परिवेश में जन्म होता है।

आर्यसमाज वैदिक राजधर्म का प्रचार भी करती है। सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास का शीर्षक 'राजधर्म की व्याख्या' है। इस राजधर्म को ऋषि दयानन्द ने वेदों पर आधारित प्राचीन वेदानुकूल एवं उपादेय ग्रन्थ मनुस्मृति, शतपथ ब्राह्मण, शुक्रनीति, रामायण एवं महाभारत के आधार पर प्रस्तुत किया है। देश की स्वतन्त्रता के बाद आर्यसमाज का कर्तव्य था कि वह अपना राजनीतिक दल बनाकर सत्यार्थप्रकाश एवं राजधर्म विषयक वैदिक ग्रन्थों के आधार पर राजनीति में सक्रिय भाग लेता और देश की व्यवस्था को वेद व वैदिक ग्रन्थों के आधार पर चलाने के लिये पुरुषार्थ करता। आर्यसमाज ने इसकी उपेक्षा की जिस कारण देश में पाश्चात्य देशों मुख्यत: इग्लैण्ड आदि की व्यवस्था के अनुसार नियम बनाये गये। ऐसे अनेक नियम, विधान व व्यवस्थायें भी की गईं जिससे देश कमजोर हो रहा है। आर्यसमाज ने शिक्षा विषयक उत्तम विचार भी दिये हैं जिसका उल्लेख सत्यार्थप्रकाश के तीसरे सम्मुल्लास में मिलता है। आर्यसमाज गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की पोषक है। इस प्रणाली में संस्कृत सहित कुछ अन्य भाषाओं एवं ज्ञान विज्ञान से संबंधित विषयों सहित आधुनिक चिकित्सा एवं अभियांत्रिक विद्या, कम्प्यूटर आदि की समयानुकूल शिक्षा भी दी जा सकती है। विद्यार्थी जीवन में मनुष्य को धर्मशास्त्र भी अवश्य पढ़ना चाहिये तभी मनुश्य नैतिक गुणों को धारण कर व उनका आचरण कर सभ्य मनुष्य बन सकता है। वैदिक धर्मशास्त्रों की शिक्षा का अभाव मनुष्य को चारित्रिक पतन सहित भ्रष्टाचारी एवं नास्तिक बनाता है। यही कारण है कि आजकल शिक्षित व्यक्ति प्राय: नास्तिक होते हैं। वह ईश्वर व आत्मा के स्वरूप सहित मनुष्य के धार्मिक कर्तव्यों के प्रति विज्ञ, उत्साही व आचरणशील नहीं होते।

आर्यसमाज एक राष्ट्रवादी संस्था भी है। वेद में पृथिवी को माता कहकर उसका स्तवन किया गया है। हमें अपने देश के लिये अपना सर्वस्व समर्पित करने की भावना से ओतप्रोत रहना चाहिये। ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना भी वैदिक संस्कृति की देन है। 'सत्यमेव जयते' वैदिक संस्कृति का ही एक ध्येय वाक्य है। वैदिक धर्म सरलता का प्रतीक है। इसमें भड़कीले पहनावों व वेशभूषा सहित अप्राकृतिक सौन्दर्य प्रसाधनों के प्रयोग की अनुमति नहीं है। यह बातें मनुष्य के व्यक्तित्व व जीवन की उन्नति में साधक न होकर बाधक होती हैं। संक्षेप में यही कहना है कि महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार, नास्तिकता को दूर कर आस्तिक जीवन का निर्माण करने, अविद्या को दूर कर विद्या की वृद्धि करने, असत्य, अन्याय व शोषण को दूर करने तथा मनुश्य का सर्वांगीण विकास करते हुए वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा के लिये की थी जिसमें समाज सुधार भी मुख्य अंग व उद्देश्य था। विचार करने पर निश्कर्ष निकलता है कि वैदिक जीवन ही सुखों का आधार है जहां मृत्यु के बाद भी सुख व मोक्ष-आनन्द की प्राप्ति की सम्भावना है। आर्यसमाज द्वारा वेद प्रचार, समाज सुधार सहित प्राणी मात्र की सर्वांगीण उन्नति का कार्य होता है। आर्यसमाज की शिक्षायें सार्वकालिक व सर्वहितकारी होने से यही भविष्य का सर्वसम्मत धर्म हो सकता है।

ईश्वर से महान् कोई नही

-डॉ० कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

इस संसार में दो प्रकार के मनुष्य रहते हैं। कुछ ऐसे हैं जो अपने जीवन को परोपकार में लगाते हैं, प्राणिमात्र की सेवा को ही अपना उद्देश्य समझते हैं। ऐसे लोग देव-कोटि के हैं। दूसरे लोग वे हैं जो बिना कारण दूसरों को कष्ट और पीड़ा देते हैं। वे असुर या राक्षस कहलाते हैं। परमात्मा तो उन्हीं लोगों की सहायता करता है जो देवता बनकर सेवा का रास्ता चुनते हैं। संसार में अग्नि, वायु, जल आदि ऐसे तत्त्व भी हैं जो परमात्मा से शक्ति ग्रहण करते हैं। हमें यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि इन जड़ पदार्थों को प्राप्त शक्ति इनकी अपनी है। वस्तुतः अग्नि, जल, वायु आदि जड़ देवता भी परमात्मा से ही शक्ति पाते हैं। इसी बात को ऋषि ने एक कहानी के द्वारा इस प्रकार समझाया-

एक बार जब अग्नि आदि देवता अपने को ही सब-कुछ मान बैठे तो परमात्मा ने उनकी परीक्षा लेने की ठानी। संसार में हम अनेक कठिन कामों को भले ही कर लें, किन्तु परीक्षा में सफलता प्राप्त करना तो प्रायः मुश्किल हो जाता है। वही बात इन देवताओं के लिए भी हुई। जब वह निराकार परमात्मा इनकी परीक्षा लेने के लिए विचित्र रूप लेकर यक्ष के रूप में प्रकट हुआ तो अग्नि आदि उसे पहचान ही नहीं पाए। उन्होंने आपस में सलाह कर अग्नि देवता से आकर कहा कि वह इस विचित्र यक्ष के पास जाए और उसे जानने की कोशिश करे।

सच तो यह है कि परमात्मा न तो प्रकट होता है और न कोई रूप लेता है। बात तो समझने और समझाने की है। जब अग्नि यक्ष के पास पहुँचा तो यक्ष ने उसका परिचय पूछा। अब सबको जलाने की शक्ति रखनेवाले अग्नि देवता ने बढ़-चढ़कर अपना परिचय दिया। उसने कहा कि इस संसार में जो कुछ है, उसे जलाकर भस्म कर देने की शक्ति उसमें है।

ऐसी अहंकारपूर्ण बात कहते समय अग्नि यह भूल गया था कि उसकी यह शक्ति तो परमपिता की ही देन है। खैर, जब यक्ष ने एक हल्का-सा तिनका उसके सामने रखकर उसे जलाने के लिए कहा तो अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर भी अग्नि उस तुच्छ तिनके को नहीं जला सका। उसे निराश होना पड़ा और वह मुँह लटकाकर अपने मित्र देवताओं के पास आ गया।

अब वायु नामक प्रचण्ड और शक्तिशाली देवता यक्ष के समीप पहुँचे और लगे अपने बल का बखान करने। कहने लगे-इस दुनिया में ऐसी कौन-सी चीज है जिसे हम उखाड़कर फैंक नहीं सकते? हमारे तीव्र वेग से तो मकानों की छतें तक उड़ जाती हैं। यक्ष ने उनकी परीक्षा लेने के लिए वही उपाय काम में लिया। उन्हें भी उस तिनके को उड़ाने के लिए कहा। कितना आश्चर्य कि तूफानों और आँधियों से जनता को आकुल-व्याकुल करनेवाले वायुदेव उस छोटे-से तिनके को हिला भी नहीं सके, उड़ाना तो दूर की बात थी । अब तो अकेले जल ही बचे थे। उन्हें भी जब यक्ष ने तिनके को गलाने के लिए कहा तो उनके लिए यह तुच्छ-सा कार्य भी असम्भव हो गया।

ऋषि आगे कहते हैं कि अग्नि, वायु, जल आदि प्राकृतिक शक्तियों को अपने बल का गर्व भले ही था, किन्तु वे यह नहीं जानते थे कि उन्हें यह शक्ति चैतन्यस्वरूप परमात्मा ने दी है। स्वयं चैतन्य का गुण धारण करनेवाला जीवात्मा ही परमात्मा को जानने की शक्ति रखता है, क्योंकि वही उसके निकट भी है। इस कहानी को समाप्त करते हुए केनोपनिषद् के रचयिता ऋषि हमें यह उपदेश देते हैं कि परमपिता परमात्मा ही इस जड़ व चेतन सृष्टि का संचालक है। उसकी शक्ति से ही सारे जड़ पदार्थों को शक्ति प्राप्त होती है, किन्तु उसे जानने, पहचानने तथा प्राप्त करने का सामर्थ्य तो जीव में ही है जो अपनी स्वतंत्र चेतन सत्ता रखता हुआ परमात्मा के अत्यन्त निकट भी है। परमात्मा ही उसका सच्चा सखा, गुरु, शासक और मार्गदर्शक है। अपनी इन्द्रियों को वश में रखकर तथा फल की आसक्ति को छोड़कर कर्त्तव्य पालने से हम परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं।

स्मृतिशेष भवानीलाल भारतीयकृत उपनिषदों की कहांनियां से साभार

ओ३म्

वैदिक साधन आश्रम

तपोवन, नालापानी, देहरादून

द्वारा आयोजित

ग्रीष्मोत्सव

आर्य समाज के संस्थापक,
वेदों के उद्धारक एवं युग प्रवर्तक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

(1825-1883)

बुद्धवार, 11 मई 2022 से
रविवार, 15 मई 2022 तक

आश्रम सोसाइटी के सदस्यगण : विजय कुमार आर्य, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, सुधीर कुमार माटा, श्याम आर्य, विक्रम बावा, योगेश मुंजाल, डॉ. शशि वर्मा, महेन्द्र सिंह चौहान, योगराज अरोड़ा, कुलदीप चौहान, विनीश आहुजा, अशोक वर्मा ।

कार्यक्रम के प्रमुख सहयोगी : रणजीत राय कपूर, जीतेन्द्र तोमर, रमेश चन्द, सुशील कुमार भाटिया, प्रेमसिंह।

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com Web : www.vaidicsadhanashramdehradun.com

ग्रीष्मोत्सव, योग साधना एवं अथर्ववेद यज्ञ

बैशाख शुक्ल दशमी से वैशाख सुदि चतुर्दशी विक्रमी सम्वत् 2079 तक तद्नुसार बुधवार 11 मई से रविवार 15 मई 2022 तक मनाया जायेगा।

योग साधना निर्देशक एवं यज्ञ के ब्रह्मा	:	**स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती**
वैदिक विद्वान	:	आचार्य डा0 वागीष जी, पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती जी, डॉ0 धन्नजय जी, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, डॉ0 सुखदा सोलंकी जी, आचार्य डा0 अन्नपूर्णा जी, पं. सूरत राम शर्मा जी, पं. वेद वसु शास्त्री जी, श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी
वेद पाठ	:	श्रीमद दयानन्द आर्ष ज्योर्तिमठ गुरूकुल पौंधा के ब्रह्मचारियों द्वारा
यज्ञ तथा अन्य कार्यक्रमों के संचालक	:	पंडित सूरतराम शर्मा जी, श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी जी एवं डॉ. अनिल आर्य जी
भजनोपदेशक	:	श्री कुलदीप आर्य जी, पं आर्यमुनि जी एवं श्रीमती मीनाक्षी पंवार जी

बुधवार 11 मई से रविवार 15 मई 2022 तक प्रतिदिन

योग साधना : प्रातः 4.00 से 6.00 बजे तक	यज्ञ एवं संध्या : प्रातः 3.30 से 6.00 बजे तक
संध्या एवं यज्ञ : प्रातः 6.30 से 8.30 बजे तक	भजन एवं प्रवचन : रात्रि 07.30 से 09.30 बजे तक
भजन एवं प्रवचन : प्रातः 10 से 12 बजे तक	

बुधवार दिनांक 11 मई 2022

ध्वजारोहण	:	प्रातः 9:00 बजे – श्री उमेश शर्मा 'काऊ' जी के करकमलों से
यज्ञ के यजमान	:	श्री विजय सचदेवा एवं परिवार
कार्यक्रम के अध्यक्ष	:	श्री चन्द्रगुप्त विक्रम जी
भजन	:	श्री कुलदीप आर्य जी, श्री आर्यमुनि जी
प्रवचन विषय प्रातः	:	महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज
वक्ता प्रातः सत्र	:	आचार्य डा0 वागीष जी, आचार्य आशीष जी
प्रवचन विषय सांय	:	विश्व में नवजागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द
वक्ता सांयकाल सत्र	:	पं0 उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी जी

युवा सम्मेलन — गुरूवार दिनांक 12 मई 2022

कार्यक्रम के अध्यक्ष	:	डा० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री
भजन	:	श्री कुलदीप आर्य जी
प्रवचन विषय प्रातः	:	पाश्चात्य संस्कृति के आक्रमण से युवाओं की रक्षा के उपाय
वक्ता प्रातः सत्र	:	आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, स्वामी योगेश्वरानन्द जी, आचार्य डा0 धन्नजय जी, आचार्य डा0 वागीष जी
प्रवचन विषय सायं	:	तनाव रहित जीवन जीने की कला
वक्ता सांयकाल सत्र	:	पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य

महिला सम्मेलन — शुक्रवार, दिनांक 13 मई 2022

मुख्य अतिथि	:	श्रीमती मीना अग्रवाल जी
कार्यक्रम की अध्यक्ष	:	श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी
भजन	:	श्रीमती मीनाक्षी पंवार जी एवं द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरूकुल की ब्रह्मचारिणियाँ
प्रवचन विषय प्रातः	:	वैदिक संस्कृति के अनुपालन से ही नारी जाति का सम्मान एवं सर्वांगीण विकास सम्भव
वक्ता प्रातः सत्र	:	आचार्य डा0 वागीष जी, आचार्य डा0 अन्नपूर्णा जी, डा0 सुखदा सोलंकी जी
सांयकाल विषय सांय	:	दान प्रकृति का ऋत नियम है
वक्ता सांयकाल सत्र	:	पं0 उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, आचार्य डा0 वागीष जी

योग एवं उपासना सम्मेलन — शनिवार, 14 मई 2022

कार्यक्रम के अध्यक्ष	:	स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी
भजन	:	श्री कुलदीप आर्य जी, पं0 आर्यमुनि जी
प्रवचन विषय प्रातः	:	दैनिक जीवन में ध्यान की आवश्यकता
वक्ता प्रातः सत्र	:	आचार्य डा0 वागीष जी, पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, आचार्य आशीष जी
सांयकाल भजन संध्या	:	श्री कुलदीप आर्य जी एवं श्रीमती मीनाक्षी पंवार जी

नोटः शनिवार को प्रातः कालीन यज्ञ एवं भजन प्रवचन के कार्यक्रम तपोभूमि (पहाड़ी पर) आयोजित किये जायेंगे।

रविवार, 15 मई 2022

समापन समारोह	:	प्रातः 10:00 से 1:00 बजे तक
मुख्य अतिथि	:	मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी जी
विशिष्ट अतिथि	:	स्वामी यतीश्वरानन्द जी
सभाध्यक्ष	:	श्री विजय कुमार आर्य जी, अध्यक्ष तपोवन आश्रम, देहरादून
कार्यक्रम संचालक	:	डॉ. अनिल आर्य जी
अतिथियों का स्वागत	:	इं0 प्रेम प्रकाश शर्मा (सचिव तपोवन आश्रम),
भजन	:	श्री कुलदीप आर्य जी, पंडित आर्यमुनि जी, श्री रमेशचन्द्र स्नेही जी
पुस्तक विमोचन	:	श्री विरेन्द्र राजपूत द्वारा रचित ऋग्वेद के प्रथम दशांश मंत्रों का काव्यांश
प्रवचन विषय	:	घर में सुख–शान्ति कैसे बनायें
वक्ता	:	पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, आचार्य डा0 वागीष जी, आचार्य आशीष जी, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी,डा0 अन्नपूर्णा जी
सम्बोधन	:	अतिथियों द्वारा सम्बोधन
धन्यवाद ज्ञापन	:	आश्रम के अध्यक्ष श्री विजय कुमार आर्य जी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन
ऋषिलंगर	:	समापन समारोह के उपरान्त ऋषिलंगर की व्यवस्था

आंमत्रित वैदिक विद्वान एवं अतिथिगण

डॉ. नवदीप जी, डॉ. कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री जी, श्री मनमोहन आर्य जी, श्री एस.एस. वर्मा जी,
श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी, श्री दयाकृष्ण कांडपाल जी, श्री ओमप्रकाश मलिक जी, श्री सुधीर गुलाटी जी,
डॉ. महेश कुमार शर्मा, श्री राजकुमार भण्डारी जी, श्री महावीर सिंह जी, श्री अतर सिंह जी, श्री अजय त्यागी जी,
श्री धर्मपाल शर्मा जी, श्री तीरथ कुकरेजा जी, श्री संजय जैन जी, श्री पंकज त्यागी जी,
श्री नरेन्द्र वर्मा जी, श्री रामपाल रोहिला जी, श्री अरविन्द शर्मा जी, श्री दयानन्द तिवारी जी,
डॉ. बृजपाल आर्य जी, श्री नरेन्द्र साहनी जी, श्री ओमप्रकाश महेन्द्रू जी, श्रीमती कान्ता काम्बोज जी,
श्री ज्ञानचन्द गुप्ता जी, श्री भगवान सिंह जी, श्री शत्रुघन कुमार मौर्य जी, श्री जीतेन्द्र सिंह तोमर जी,
श्री महिपाल सिंह जी, श्री रमेश भारती जी, श्री उम्मेद सिंह विशारद जी, श्री रणजीत राय कपूर जी,
श्रीमती ऊषा सिंह, डॉ. विश्वमित्र शास्त्री जी, श्री ओमप्रकाश अग्रवाल जी, श्री मानपाल सिंह जी, श्री दिनेश आर्य जी,
श्री हाकम सिंह जी, श्रीमती पुष्पा गुसाईं, श्री वेद प्रकाश धीमान जी, श्री प्रदीप दत्ता जी,
श्री पी.डी. गुप्ता जी, श्री केसर सिंह जी, श्री रतन सिंह जी, श्री महिपाल सिंह त्यागी जी,
श्री रामबाबू सैनी जी, श्रीमती सविता अग्रवाल जी, श्री बृजेश शर्मा जी, श्री चन्द्रगुप्त विक्रम जी,
श्री पी. डी. गुप्ता जी, डा आनन्द सुमन जी, श्रीमती मीना अग्रवाल जी,
श्री सिद्धार्थ अग्रवाल जी एवं सभी आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री एवं कोषाध्यक्ष

निवेदक

विजय कुमार आर्य, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, सुधीर कुमार माटा, श्याम आर्य, विक्रम बावा, योगेश मुंजाल, डॉ. शशि वर्मा, महेन्द्र सिंह चौहान, योगराज अरोड़ा, कुलदीप चौहान, विनीश आहुजा, अशोक वर्मा, रणजीत राय कपूर, जीतेन्द्र तोमर, रमेश चन्द, सुशील कुमार भाटिया, प्रेमसिंह

एवं समस्त सदस्य वैदिक साधन आश्रम सोसायटी, देहरादून।

मनुष्य को न अपने पूर्वजन्मों और न परजन्मों का ज्ञान है

- मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य अपने शरीर के हृदय स्थान में निवास करने वाली एक अनादि, नित्य, अविनाशी एव अल्पज्ञ चेतन आत्मा है। अल्पज्ञ जीवात्मा को मनुष्य आदि योनियों में जन्म लेकर मनुष्य योनि में माता, पिता, आचार्य की सहायता से ज्ञान अर्जित करना पड़ता है। इन साधनों से अर्जित ज्ञान को वह अनेकानेक ग्रन्थों के अध्ययन व स्वाध्याय तथा अपने विचार एवं चिन्तन से उन्नत करता है। इस प्रक्रिया से मनुक्ष्य कितना भी ज्ञान प्राप्त कर ले परन्तु फिर भी वह अपने इस जन्म में अर्जित ज्ञान को कुछ सीमा तक स्मरण रख सकता है। इस जीवन में घटी समस्त घटनाओं व माता, पिता आदि से प्राप्त सभी ज्ञान को वह समय के साथ भूलता भी जाता है। मनुष्य इस जन्म में अपने पूर्वजन्मों के कर्मानुसार जन्म लेता है। उसे माता, पिता तथा परिवेश भी प्रायः अपने प्रारब्ध के अनुसार ही मिलता है। उसे यह ज्ञात नहीं रहता कि वह इस जन्म से पूर्व, पूर्वजन्म में किस स्थान पर, किस योनि में, किस परिवार में रहता था ? उसकी मृत्यु वहां कब व कैसे हुई थी, उसे इन बातों का ज्ञान नहीं रहता। इन्हें वह भूल चुका होता है। इसका कारण यह होता है कि हमारे पूर्वजन्म का शरीर छूट जाता है। उस शरीर से हमारी आत्मा व सूक्ष्म शरीर ही पृथक होकर अर्थात् शरीर से निकल कर इस जन्म में आते हैं। पूर्वजन्म में मृत्यु होने तथा हमारे इस जन्म के बीच काफी समय व्यतीत हो जाता है। हमें लगता है कि पूर्व जन्म में मृत्यु के बाद जब जीवात्मा सूक्ष्म शरीर सहित निकलता है तो उसकी अवस्था मूर्छित व्यक्ति के समान होती है। उस अवस्था में जीवात्मा को इसके इर्द-गिर्द घटने वाली घटनाओं का ज्ञान नहीं होता और न ही उसे किसी प्रकार का सुख व दुःख ही अनुभव होता है। सुख व दुःख मनुष्य को तभी होता है जब कि आत्मा का सम्बन्ध शरीर, सुख-दुःख अनुभव कराने वाली इन्द्रियों व मन आदि से होता है। जन्म ले लेने के बाद उसे सुख व दुःख का अनुभव होना आरम्भ हो जाता है।

वैदिक साहित्य में बताया जाता है कि हमारा जो चित्त है उसमें हमारी स्मृतियां रहती हैं। हमारा यह चित्त हमारे सूक्ष्म शरीर का भाग होता है और यह हमारे भौतिक शरीर से भी जुड़ा रहता है। नये शरीर में पुरानी सभी स्मृतियां सजीव नहीं हो पाती। यदा-कदा कुछ उदाहरण सुनने को मिलते हैं जिसमें बताया जाता है कि किसी बालक को अपने पूर्वजन्म की कुछ स्मृतियां ठीक ठीक याद हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि किसी दुःखदाई घटना के होने पर उसकी स्मृतियां व संस्कार मनुष्य के सूक्ष्म शरीर के चित्त के साथ गहराई से जुड़कर इस जन्म में आ जाते हैं और जीवन के आरम्भ काल में कुछ समय तक उनका प्रभाव व स्मृतियां उपस्थित रहते हैं। यही मनुष्ययोनि में पुनर्जन्म होने पर पूर्वजन्म की कुछ घटनाओं की स्मृति का कारण होता है। पुनर्जन्म की कुछ हल्की सी स्मृतियों का एक उदाहरण यह है कि छोटा बच्चा सोते समय कभी हंसता है और कभी गम्भीर व चिन्तित सा दिखाई देता है। उसे स्तनपान का भी अनुभव होता है। उसे स्वप्न भी आते हैं जिनसे वह कभी सुख का अनुभव करता है और कभी दुःख का। इसका ज्ञान भी उसके सोते समय की भाव-भंगिमाओं को देखकर होता है। इन सबका का कारण पुनर्जन्म की स्मृतियां ही होती हैं।

मनुष्य इस जन्म में कुछ नाम मात्र का भौतिक व

सांसारिक ज्ञान प्राप्त कर अभिमान करता हुआ देखा जाता है। वह नैतिक नियमों का पालन भी नहीं करता। बड़े बड़े राजनैतिक व सरकारी पदों पर बैठे व्यक्तियों के भ्रष्टाचार के कारनामें समय-समय पर सामने आते रहते हैं। इसका मुख्य कारण उनका धन व सुख सुविधाओं के प्रति प्रलोभन होना होता है। वह अपने जीवन के विषय में चिन्तन नहीं करते कि हम क्या है? कौन हैं, कहां से आये हैं, मरने के बाद कहां जायेंगे, हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है और उस उद्देश्य की प्राप्ति के साधन क्या हैं? हमें तो ईश्वर के सत्य स्वरूप का ज्ञान भी नहीं हैं। अधिकांश लोग तो ईश्वर व आत्मा को जानने का प्रयास ही नहीं करते। वह अपनी ज्ञान की आंखे बन्द कर परम्परानुसार व दूसरों को देख कर बिना परीक्षा किये ही अज्ञान व अविद्या पर आधारित परम्पराओं का पालन करते हैं जबकि परीक्षा करने पर वह सब विधि-विधान व परम्परायें अन्धविश्वासयुक्त व अज्ञान से युक्त सिद्ध होती हैं। जीवात्मा के यह कृत्य उसके घोर अज्ञान व अविवेक को सिद्ध करते हैं। यह सिद्ध है कि आजकल अपवादों को छोड़कर प्रायः सभी मनुष्य हीरे के समान महत्वपूर्ण इस मनुष्य जन्म को वृथा गंवा रहे हैं। उनका मुख्य कार्य इस जन्म में विद्या को प्राप्त करना था। विद्या भौतिक व सांसारिक ज्ञान को भी कहते हैं और विद्या वह भी है जो वेदों, उपनिषदों व दर्शनों में उपलब्ध है। सांसारिक ज्ञान को जानकर मनुष्य उसका यदि अविवेकपूर्ण उपभोग करता है तो वह उन्नत होने के स्थान पर पतन की गहरी खाई में गिरता है। यह बात भी ज्ञानी व समझदार लोग ही जान सकते हैं। एक सामान्य सा सिद्धान्त है कि भोग का परिणाम रोग है और इससे मनुष्य को दुःख प्राप्त होता है। ज्ञानी लोग भोग से बचते हैं और जीवन के लिए आवश्यक न्यूनतम पदार्थो का ही उपभोग करते हैं।

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में ईश्वर ने मनुष्य को शिक्षा दी है कि 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्वित्धनम्' अर्थात् मनुष्य को भौतिक पदार्थो का भोग त्याग पूर्वक करना चाहिये। लालच नहीं करना चाहिये अर्थात् प्रलोभन में नहीं फंसना चाहिये। लालच का परिणाम बहुत बुरा होता है। हम सुनते हैं कि बड़े-बड़े धनाड्य लोग नशा करते हैं। नशा करके उनका अपने शरीर पर नियंत्रण नहीं रहता। ऐसी भी घटनायें प्रकाश में आयी हैं कि नशे की हालत में कोई नहाने के टब में गिर गया और उसकी मृत्यु हो गई। यह सुनकर दुःख होता है। परमात्मा ने जो मनुष्य शरीर ज्ञान प्राप्त कर जन्म मरण के चक्र से छूटने के लिए दिया था उसका हमने यह क्या कर डाला। हमने लक्ष्य की ओर कदम रखा भी नहीं, प्रलोभन में फंसे रहे, भोग भोगते रहे और हमारा जीवन भी समाप्त हो गया। यह स्थिति उचित नहीं है। परमात्मा ने हमें मनुष्य बनाया है। हमारा कर्तव्य है कि हम अपने जीवन से जुड़े सभी प्रश्नों को महत्व दें और मत-मतान्तरों को दूर रखकर सत्य ज्ञान की प्राप्ति करें और उसी के अनुसार आचरण करें। ऐसा करने पर ही हमारे जीवन का कल्याण हो सकता है।

मनुष्यों को पूर्वजन्म व परजन्म विषयक ज्ञान नहीं है। इसका कारण है कि यह ज्ञान हमारी शिक्षा पद्धति में सम्मिलित नहीं है। हम विदेशी अंग्रेजी शिक्षा पद्धति से ज्ञान अर्जित कर रहे हैं। उनकी धर्म, संस्कृति व सभ्यता कोई दो-तीन हजार वर्ष पुरानी है। वह अल्पज्ञ जीव के ज्ञान पर आधारित है। भारत की धर्म, संस्कृति व सभ्यता 1 अरब 96 करोड़ वर्ष पुरानी है। भारत में ही सच्चिदानन्द व सर्वव्यापक ईश्वर ने सृष्टि की आदि में अपना ज्ञान, जो वेदज्ञान कहलाता है, दिया था। वेदों में ईश्वर, जीव व प्रकृति का सत्य ज्ञान दिया गया है। मनुष्य का जन्म क्यों होता है, पुनर्जन्म क्या है, जन्म का आधार क्या है, परजन्म की चर्चा और उसमें हमारे कर्मो की भूमिका आदि पर विस्तार से तथ्यपूर्ण प्रकाश डाला गया है। उसी ज्ञान के आधार पर हमारे ऋषियों ने, जो ज्ञानी व वैज्ञानिक थे, तर्कपूर्ण रीति से सभी विषयों को समझाया है। उपासना की पद्धति भी हमें योग व सांख्य आदि दर्शनों से प्राप्त होती है। ईश्वर के प्रति मनुष्यों के कर्तव्यों का ज्ञान भी इन ग्रन्थों सहित स्वामी दयानन्द जी के सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु,

उपदेशमंजरी आदि ग्रन्थों से यथावत् होता है। संसार में जो मनुष्य इन ग्रन्थों की उपेक्षा करता है वह वस्तुत: अपने भावी जीवन व परजन्म को बिगाड़ता है। वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि ईश्वर, जीव व प्रकृति अनादि, नित्य व अविनाशी हैं। अविनाशी व अनादि जीव के इस मनुष्य जन्म से पूर्व भी असंख्य जन्म हो चुके हैं। असंख्य बार यह जन्मा है और इतनी ही बार इसकी मृत्यु हुई है। संसार में मनुष्य सहित पशु, पक्षी आदि भिन्न-भिन्न योनियां हैं, इन सभी में हम असंख्य बार आ जा चुके हैं। इस जन्म में भी हम पूर्वजन्म से मरने के बाद ईश्वर की व्यवस्था जाति, आयु, भोग के अनुसार यहां आये हैं। यहां से कुछ समय बाद हमारी मृत्यु होगी और हम पुन: जाति, आयु और भोग के अनुसार नया जन्म प्राप्त करेंगे। हमारे शुभ कर्मों से हमें इस जन्म में भी सुख मिलेगा और परजन्म में भी। इस जन्म में अशुभ कर्म करने पर हमारा यह जीवन भी सुख व शान्ति भंग करने वाला हो सकता है और भावी तो होगा ही। बहुत से लोग अच्छे बुरे दोनों प्रकार के कार्य करते हैं, फिर भी सुखी रहते हैं। इसका कारण यह है कि वह पूर्व कृत शुभ कर्मों के कारण सुखी है। इस जीवन में बुरे कर्मों का परिणाम अवश्यमेव दु:ख होगा। वह जब मिलेगा तो मनुष्य त्राहि-त्राहि करेगा। अस्पतालों व ट्रामा सेन्टरों में जाकर इस तथ्य की पुष्टि की जा सकती है। ईश्वर न करे हम में से किसी को इस स्थिति से गुजरना पड़े। इसी लिए ईश्वरोपासना, यज्ञ एवं परोपकार आदि कर्मों का करना आवश्यक है। अत: मनुष्य को ज्ञान प्राप्ति और सद्कर्मों के प्रति सावधान रहना चाहिये। उसे सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ का तो अवश्य ही अध्ययन करना चाहिये और उसकी शिक्षाओं को बुद्धि की कसौटी पर कस कर उन पर आचरण करना चाहिये। इससे मनुष्य का यह जन्म व परजन्म दोनों सुखी व उन्नत होंगे, यह निश्चित है।

वैदिक साहित्य व सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर मनुष्य को अपने पूर्वजन्म व परजन्म विषयक मूलभूत जानकारी मिलती है। इसका हमने लेख में परिचय कराया है। हम आशा करते हैं कि पाठक इससे लाभ उठायेंगे और वैदिक साहित्य के स्वाध्याय वा अध्ययन में प्रवृत्त होंगे।

श्री चमनलाल रामपाल जी को श्रद्धांजलि

वैदिक धर्म एवं संस्कृति के लिए सर्वात्मना समर्पित ऋषिभक्त **श्री चमनलाल आर्य जी** का आयु के 100वें वर्ष में दिनांक 2 मार्च, 2022 को अपने कुरुक्षेत्र-हरियाणा निवासी पुत्र के निवास पर निधन हो गया। उनके परिवार में उनकी धर्मपत्नी माता संयोगिता जी सहित दो पुत्र, पुत्री आदि परिवारजन हैं। श्री चमनलाल जी जीवनभर आर्यसमाज की गतिविधियों से जुड़े रहे। उन्होंने अनेक विषयों पर लगभग 40 पुस्तकों का प्रणयन किया था।

श्री चमनलाल रामपाल जी की मृत्यु से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह श्री चमनलाल जी की पुण्य आत्मा को अपनी न्याय व्यवस्था के अनुसार श्रेष्ठ योनि प्रदान करें तथा उनके परिवारजनों को वियोग के दु:ख को सहने की शक्ति दे। वैदिक साधन आश्रम तपोवन परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा को सश्रद्ध श्रद्धांजलि।

विजय कुमार आर्य	**इ. प्रेम प्रकाश शर्मा**	**अशोक वर्मा**
अध्यक्ष	सचिव	कोषाध्यक्ष

श्री हनुमान जी बन्दर नहीं थे, उनका वानर वंश था

- राममुनि आर्य वानप्रस्थ, रोहतक

लगभग साढ़े नौ लाख वर्ष पहले आर्यवर्त देश इस भारतवर्ष को ही कहते थे। इस देश के कई राष्ट्र थे, जिनके नमा देव राष्ट्र, आर्य राष्ट्र, वानर, नाग और असुर, ये पाँच राष्ट्र थे। उत्तर में हिमालय, तिब्बत आदि पर देव, उसके आसपास कश्मीर आदि उनके ही अधीन थे। आर्य राष्ट्र उत्तर पूर्व के भाग में फैला हुआ था और वानर राष्ट्र आन्ध्रप्रदेश का कुछ भाग तथा मद्रास व उत्कल प्रदेश था। नागों का राज्य नागपुर व उसके आसपास तथा लंका-अण्डमान तक फैला हुआ था और असुर राक्षस राष्ट्र पंचवटी (नासिक) से लंका तक तथा मालद्वीप, सोमालिया, बलिद्वीप आदि थे, वहां का राजा रावण था। रावण चार वेद, छः शास्त्रों का विद्वान होते हुए भी चरित्रहीन था। वानर राष्ट्र का राजा बाली था। उसकी राजधानी किष्किन्धा नगरी थी। उसके अधीन महेन्द्रपुर और रतनपुर की रियासतें थीं। हनुमान जी के दादा प्रह्लाद राय विद्याधर थे और उनकी महारानी केतूमती थी, जो रतनपुर में रहते थे। इनके पुत्र का नाम केसरी पवन कुमार था, यह महर्षि अगस्त्य जी के आश्रम में पढ़े थे। यह पक्षियों की आवाज भी बोल लेते थे। इन्होंने कई भाषायें सीख रखी थीं। इनका विवाह महेन्द्रपुर के राजा महेन्द्र राय की सुपुत्री अंजनी से हुआ था। पवन केसरी ने अपनी पत्नी से प्रतिज्ञा करा रखी थी कि मैं बारह वर्ष तक ब्रह्मचारी रहने के बाद ही सन्तान के लिये आपसे मिलूंगा। एक समय की घटना है, बाली और रावण ने कुबेर के साथ युद्ध छेड़ रखा था, उसमें केसरी पवन भी गये थे, तभी ब्रह्मचर्य व्रत के 12 वर्ष पूरे होने में एक दिन ही बचा था।

होनी का चमत्कार

केसरी पवन अपनी सेना के साथ जा रहे थे। रास्तें में रात होने के कारण जंगल में ही सेना को रोककर विश्राम कर रहे थे, इतने में एक पक्षी की आवाज सुनी, वह बहुत दर्दभरी थी। केसरी ने मन्त्री से पूछा- यह कौन सा पक्षी है, जो इस समय बोल रहा है? मन्त्री ने कहा यह चकवी अपने नर चकवे के विरह में तड़प रही है। यह सुनते ही पवन को याद आया, आज 12 वर्ष पूरे हो गये हैं, अंजनी मेरे विरह में तड़प रही होगी। मन्त्री से पूछकर वह अपने विमान से रात को ही अंजनी के महल में गये और अंजनी से मिलकर वापस जाते समय किसी को बिना बताये ही, एक अंगूठी अंजनी को देकर वापस चले गये और प्रातः अपनी सेना लेकर युद्ध में रत हो गये। युद्ध 12 महीने तक होता रहा। पीछे से रानी केतूमती ने जाना कि अंजनी गर्भवती है। रानी ने उनके पिता संदेश भेजा दिया कि लड़की चरित्रहीन हो गयी है, इसे आप ले जाओ। तो पिता ने भी उसे नहीं रखा, तब विद्याधर राय ने एक दासी बसन्तमाला, जो अंजनी के साथ रहती थी, दोनों को जंगल में भेज दिया। वहां वह दोनों विलाप कर रही थीं, तभी शिवजी और पार्वती विमान से जा रहे थे, तब इन्हें जंगल में अकेले देख विमान उतार कर उनसे वार्ता करके उनको अपने साथ कैलाश पर ले गये, वहां पर हनुमान जी का जन्म हुआ था। एक दिन झूले में झूलते समय नीचे गड्ढे में पत्थर पर गिर पड़े, उठाकर देखा उनको कोई चोट नहीं आयी थी, तभी से इनको बजरंगी कहने लगे।

एक दिन हनुमान ही के मामा 'प्रतिसूर्या जी' अपनी पत्नी रविसुन्दरी के साथ विमान में बैठकर शिवजी के पास आये थे, तब उन्होंने अंजनी को वहां देखा और कहा कि आपकी खोज में पवन कुमार पागलों की तरह तुझे ढूंढ रहे हैं, मैं उन्हें बता दूंगा वह आपको शीघ्र ही ले जायेंगे। उनके विमान में लाल रंग की मणि लगी हुई थी, वह हनुमान ने तोड़ ली और अपने मुख में डालकर कुतरने लगा। बड़ी मुश्किल से उससे छुड़ाया, उसने उसे खाने का पदार्थ समझ लिया था। हनुमान कुछ बड़ा हो गया, तब वशिष्ठ जी के आश्रम में पढ़ने के लिये भेजा गया, जहां राम, लक्ष्मण भरत, शत्रुघ्न पढ़ते थे। वहां राम से प्रथम भेंट हनुमान की हुई, तभी से हनुमान को राम ने अपना परम मित्र बनाया लिया था और वह अध्योध्या चले गये, वहां से ऋषि विश्वामित्र जी राम व लक्ष्मण को अपने आश्रम में ले गये। जब राम और लक्ष्मण आश्रम में चले गये तो हनुमान जी का मन अयोध्या में नहीं लगा। वह अपने पिता पवन के पास चले गये, उनकी माता जी भी वहां आ चुकी थी। जब पवन जी अंजनी को राजधानी में लाये तो सभी नर-नारी बड़े प्रसन्न हुए। माता केतूमती ने कहा - मुझे बड़ा दुख हो रहा था, मैंने तेरी अंगूठी देखकर भी अंजनी पर विश्वास नहीं किया और उसे घर से निकाल दिया था। हनुमान जी के आने के बाद पिता जी ने और विद्या ग्रहण करने के लिये अगस्त्य मुनि के आश्रम में भेज दिया। यहां विद्या प्राप्त कर घर आये और पिता के साथ राजकाज में सहयोग देने लगे। हनुमान जी के तीन भाई और थे - ऋतुमान, कीर्तिमान, अंशुमान। रावण-वरूण युद्ध में भी हनुमान ही ने वरूण को हराकर बन्दी बनाया और वरूण से कर देने और युद्धपोतों के समुद्र में जाने-आने पर शुल्क लगता था। वह हटवा कर उसे छोड़ दिया।

हनुमान का विवाह सुग्रीव की बेटी पद्मरागा से हुआ था। कुछ समय बाद सुग्रीव रतनपुर गये और विद्याधर से कहा-हमारा घर पद्मरागा के बिना सूना-सूना सा रहता है। आप हनुमान को हमें दे दो, यह दोनों वहां पर ही रहा करेंगे। वह सुग्रीव के साथ किष्किन्धा जाकर रहने लगे। पद्मरागा गर्भवती हो गयी थी। एक दिन समुद्र देखने गयी तो वहां मगरमच्छ ने उसे निगल लिया। संयोग से अहिरावण का दूत अपने विमान में वहां से जा रहा था, उसने मगरमच्छ द्वारा पद्मरागा को निगलते देख लिया। उसने मगर को मारकर उसके पेट से पद्मरागा को निकाला, वह मर गयी थी। पद्मरागा को गर्भवती देख उसके पेट से बच्चे को निकाला और अपने साथ ले गया, वहां उसका नाम मकरध्वज रखा, जो हनुमान जी का पुत्र कहलाया। हनुमान जी फिर वापस रतनपुर चले गये। कुछ दिन बाद बाली और सुग्रीव में मनमुटाव हो गया और बाली ने सुग्रीव को घर से निकाल दिया और उसकी धर्मपत्नी और सम्पत्ति सब छीन ली। सुग्रीव पम्पा सरोवर के पास ऋष्यमूक पर्वत पर रहने लगा और हनुमान को अपने पास बुला लिया, वह दोनों वहां रहने लगे। आगे चलकर राम को वनवास होने पर राम-हनुमान का मिलन तब होता है, जब राम-लक्ष्मण ऋष्यमूक पर्वत के पास सीता को खोजते हुए पहुंचते हैं। सुग्रीव ने इन दोनों को वहां घूमते देखा तो हनुमान जी पर्वत से उतर कर उनके पास आये तो राम हनुमान को पहचान नहीं पाये, क्योंकि हनुमान जी ने ब्राह्मण का वेश बनाया था। हनुमान जी ने राम और लक्ष्मण को नमस्ते करके आने का कारण पूछा और सुग्रीव की व्यथा राम को सुनाई। तब राम लक्ष्मण से कहने लगे - देखो भाई! श्री हनुमान जी कितने विद्वान, व्याकरण के पण्डित हैं, इन्होंने एक शब्द भी अशुद्ध नहीं बोला। तब लक्ष्मण ने अपना सारा वृतान्त हनुमान जी को सुनाया कि हम सीता सहित पंचवटी पर रहते थे, तब एक हिरण को पकड़ने के लिये राम गये थे। हिरण

उछलता-कूदता दूर निकल गया था व राम उसके पीछे जाते समय लक्ष्मण को समझा गये थे परंतु सीता ने कटु वचन लक्ष्मण को कह दिये, जिससे लक्ष्मण राम की रक्षा के लिये चला गया और रावण मौका पाकर सीता को उठा ले गया। राम व लक्ष्मण ने वापस आकर देखा तो सीता वहां नहीं मिली और विलाप करते-करते उसकी खोज करते रहे। राम ने बाली को मारकर सुग्रीव को राजा बना दिया। बाद में सुग्रीव की सहायता से सेना इकट्ठी करके रावण के साथ युद्ध किया था। पद्मरागा के मरने के बाद हनुमान जी ब्रह्मचारी ही रहे, उन्होंने दूसरी शादी नहीं करवाई।

अब इस कहानी का साराँश समझिये

बुद्धिपूर्वक सोचकर देखें, क्या राम परमात्मा थे जो इस तरह सीता की खोज करते रहे। क्या हनुमान बन्दर थे, यदि बन्दर होते तो महाविद्वान कैसे हुए? कभी बन्दर राजा का मन्त्री होता है, क्या उनके पूर्वजों के नामों से आप नहीं जान सकते कि वह मनुष्य ही थे, पूँछ वाले बन्दर नहीं थे। राम के सारे काम हनुमान जी ने पूरे किये। लंका में जाकर सीता की खोज की, लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर उड़न खटोले में जाकर पर्वत से जड़ी-बूटी उखाड़ कर छोटी-सी पोटली (गठरी) बांध कर रातों-रात लेकर आये और लक्ष्मण के प्राण बचाये और युद्ध में सबसे अधिक राक्षसों को मारा तो राम को इतने मन भा गये कि अयोध्या ले जाकर अपने राजा होने पर हनुमान जी को अपना मन्त्री बनाया और सारे काम हनुमान जी से पूछ कर, सलाह लेकर करते थे। इसलिये राम के राज्य में हनुमान जी की पूछ थी, उनकी पूँछ नहीं थी। ऐसी भद्दी शक्ल इन मंदिर के पुजारियों ने हनुमान जी की बनाकर रख दी, इनका स्वरूप बिगाड़ कर रख दिया। हनुमान जी ने सूर्य को नहीं निगला था, क्योंकि सूर्य पृथ्वी से तेरह लाख गुणा बड़ा है। उसने तो मणि को मुख में डाला था और न ही मकरध्वज मछली से पैदा हुआ था। रामायण या रामचरित मानस में इस तरह के गपोड़े सृष्टि नियम से विरूद्ध हैं। इसलिये इनको नहीं मानना चाहिये। मेरी आप सभी सज्जन पुरुषों से, माताओं, बहनों से करबद्ध प्रार्थना है कि आप सब मिलकर उस महापुरुष की मनुष्यों जैसी ही शक्ल बनाकर कैलेण्डर, फोटो आदि बनावने की कृपा करें।

केन्द्रीय आर्य युवक परिसर द्वारा आयोजित युवक चरित्र निर्माण व योग साधना शिविर

स्थानः गुरुकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

अवधिः शनिवार, 4 जून से रविवार, 12 जून 2022 तक

आवश्यक नियम एवं निर्देशः

1. 12 वर्ष से 18 वर्ष तक के युवक शिविर में भाग ले सकते हैं।
2. इच्छुक नवयुवक रु. 250/- प्रवेश शुल्क सहित प्रवेश-पत्र भरकर अंतिम तिथि 22 मई, 2022 तक अपना स्थान सुरक्षित करवा लें।

सम्पर्क सूत्रः

आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली - 110007

फोनः 9810117464, 9013137070, 9818530543

ई-मेलः aryayouth@gmail.com वेबसाईटः www.aryayuvakparishad.com

-ऋषिभक्त विद्वान श्री चमनलाल रामपाल जी को श्रद्धांजलि-

श्री चमनलाल रामपाल जी ने देश–धर्म की उन्नति के लिए समर्पित भाव से कार्य किया

- मनमोहन कुमार आर्य

ऋषिभक्त श्री चमनलाल रामपाल जी ने देश-धर्म की उन्नति के लिए समर्पित भाव से कार्य किया। बुधवार, दिनांक 2-3-2022 को उनका उनके कुरुक्षेत्र निवासी पुत्र के निवास पर सौंवे वर्ष में देहावसान हुआ। उनको श्रद्धाजांलि के रूप में हम इस लेख में उनके व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाल रहे हैं।

आर्यसमाज का आठवां नियम है कि अविद्या का नाश तथा विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। आर्यसमाज ने इस नियम का पालन करते हुए देश देशान्तर से अविद्या दूर करने के अनेक उपाय किये जिनसे देश में जागृति व परिवर्तन आया है। ज्ञान का प्रचार व प्रकाश मौखिक व्याख्यानों तथा लेखन आदि के द्वारा किया जाता है। देहरादून निवासी वयोवृद्ध विद्वान श्री चमनलाल पाल जी ने अपने जीवन को लेखन द्वारा प्रचार के कार्यो में समर्पित किया। वह 99 वर्ष पूरे कर सौंवे वर्ष में दिनांक 2-3-2022 को दिवंगत हुए हैं। हम दिनांक 16-10-2020 को उनसे उनके निवास पर मिले थे और उनसे विस्तार से वार्तालाप किया था। देहरादून में श्री चमनलाल जी अपनी धर्मपत्नी माता श्रीमती संयोगिता जी के साथ निवास करते थे। उनका शरीर दुर्बल हो गया था तथा एक पैर की हड्डी भी टूट गई थी। अत: उनका समय बिस्तर पर लेट व बैठ कर ही व्यतीत होता था। हमने उनसे उनके समाचार जाने थे और पाया था कि उनके अन्दर ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज के प्रति प्रेम व कृतज्ञता सहित देशभक्ति की गहरी भावनायें भरी हुई थीं जिनकी अभिव्यक्ति उनसे बातचीत करते समय

बीच-बीच में होती रहती थी।

श्री चमनलाल रामपाल जी पिता पं. किशन चन्द तथा माता श्रीमती माया देवी की सन्तान थे। आपका जन्म जिला गुरदासपुर में धारीवाल के निकट सोहल गांव में 15 दिसम्बर सन् 1922 को हुआ था। आपके पिता आढ़ती की दुकान करते थे। जब चमनलाल जी दस महीने के ही थे, तब सन् 1923 में पिताजी का देहावसान हो गया था। आपकी माता जी का देहावसान 80 वर्ष की आयु में देहरादून में हुआ था। चमनलाल जी का कोई भाई नहीं था, केवल दो बहिनें थी। चमनलाल

रामपाल जी के दो पुत्र व एक पुत्री हुए। इनका एक पुत्र विद्युत इंजीनियर रहा है जो वर्तमान में कुरुक्षेत्र-हरियाणा में अपने परिवार के साथ निवास करता है। एक अन्य पुत्र अम्बाला-हरियाणा में रहते हैं और अपने कार्य से सेवानिवृत होकर किसी अन्य व्यवसायिक फर्म में कार्य कर रहे हैं। आपकी पुत्री ने भूगोल में एम.ए., पीएचडी किया था। उनका विवाह पटियाला के एक एम.बी.बी.एस., एम.डी. डाक्टर के साथ हुआ था। इन दिनों वह अपने परिवार के साथ रहती हैं। देहरादून में अपने बड़े मकान में श्री चमनलाल जी अपनी धर्मपत्नी के साथ निवास करते थे। दोनों ही वृद्ध थे इसलिये आपने सफाई, भोजन व स्नान आदि करने कराने के लिये अनेक नौकर व नौकरानियां रखे हुए थे जो आपकी सेवा करते थे जिससे आप 99 वर्ष पूर्ण कर भी सामान्य रूप से जीवन व्यतीत करते रहे। आप पूर्ण स्वावलम्बी थे। आपके पास जीवन यापन के सभी साधन थे। अत: आप अपनी सन्तानों से जीवनयापन हेतु धन नहीं लेते थे। पिता की मृत्यु के बाद बचपन में आपका पालन पोषण आपकी माता जी ने आपके चाचा पं. दुर्गादास जी के सहयोग से किया था।

श्री चमनलाल रामपाल जी की आरम्भिक व प्राथमिक शिक्षा सोहल गांव में ही हुई। इसके बाद आपने डी.ए.वी. स्कूल व कालेज, धारीवाल से बी.ए. पास किया था। आपने ज्ञानी की परीक्षा भी उत्तीर्ण की थी। श्री चमनलाल जी की नियुक्ति रक्षा मंत्रालय में हुई थी। आपने यहां कार्यालय सुपरिन्टेण्डेण्ट के पद पर कार्य किया था। यहां कार्य करते हुए आपकी प्रोन्नति प्रकाशनिक अधिकारी के पद पर हुई थी। आपने सेवानिवृति की आयु से 11 वर्ष पहले ही सेवानिवृति ले ली थी। आपकी बहिन के श्वसुर उद्योगमंत्री रहे हैं। उनके परामर्श से आपने सेवानिवृत्ति के बाद 7 वर्ष तक पंजाब में रहकर साईकिल के पुर्जे बनाने का उद्योग लगाया था। चमनलाल जी पर आर्यसमाज के संस्कार डी.ए.वी. स्कूल व कालेज, धारीवाल में पड़े थे। वहां यज्ञ व हवन होता था तथा आर्य समाज के विद्वानों के प्रवचन होते थे। प्रत्येक शनिवार को आर्य कुमार सभा का अधिवेशन हुआ करता था जिसमें आप भाग लेते थे। इससे आपमें आर्यसमाज के साहित्य के स्वाध्याय की प्रवृत्ति भी उत्पन्न हुई थी। आपने वेदभाष्य सहित ऋषि के लिखे प्राय: सभी ग्रन्थों को कई बार पढ़ा था। आपने अपने सरकारी सेवा काल व उसके पश्चात दिल्ली व शिमला सहित कानपुर में तीन वर्ष निवास किया। आप शिमला तथा देहरादून में आर्यसमाज के सदस्य व अधिकारी रहे थे।

लेखन के क्षेत्र में श्री चमनलाल रामलाल जी का उल्लेखनीय योगदान है। आपने लगभग चालीस पुस्तकें लिखी हैं। वर्तमान में भी आपकी पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। लेखन के क्षेत्र में आपने देशभक्ति व देश के हितों को ध्यान में रखकर महापुरुषों के जीवनपरक साहित्य सहित इतर अनेक विषयों पर लेखनी चलाई थी। आपकी कुछ पुस्तकों के नाम हैं 1-झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, 2- अजेय योद्धा महाराणा प्रताप, 3- वीर शिरोमणि महाराजा पृथ्वीराज चौहान, 4- कृष्ण-नीति, 5- हिन्दू समाज पर बलिदान, 6- शहीदों की सुलगती राख 7- अतीत, वर्तमान और भविष्य का आर्यसमाज, 8- बंटता पंजाब जलता शबाब, 9- भारत का मूल आधार गौवंश, 10- वीर वैरागी बन्दा बहादुर तथा 11- वीर हकीकत राय आदि। आपने वार्तालाप में कहा था कि देश दुबारा गुलाम न हो, इसलिये आपने प्रेरक साहित्य लिखा था। श्री चमनलाल जी ने हिन्दी तथा पंजाबी में कवितायें भी लिखी थी। आपका एक कविता संग्रह चमन-पुष्प के नाम से प्रकाशित हुआ। इसका दूसरा संस्करण सन् 2009 में प्रकाशित हुआ था। ऋषिभक्त चमनलाल जी ने 'बेवफा कौन' आदि कई उपन्यास तथा नाटक भी लिखे। इससे आपके बहुप्रतिभाशाली व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं। आपने अपने ग्रन्थों को स्वस्थापित संस्था 'चमन प्रकाशन' के नाम से प्रकाशित किया है। चमनलाल जी ने आर्यसमाज

के पुराने विद्वानों को अनेकों बार सुना है। आपने बताया था कि पं. रामचन्द्र देहलवी तथा महात्मा हंसराज जी आदि शीर्ष विद्वानों को आपने अनेकों बार सुना था।

श्री चमनलाल रामपाल जी को समय-समय पर देहरादून के अनेक आर्यसमाजों ने सम्मानित किया है। आपने बताया कि उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री रहे श्री नित्यानन्द स्वामी, भी भगतसिंह कोश्यारी तथा श्री भुवनचन्द खण्डूरी आदि द्वारा भी आपको सम्मानित किया गया था। आपको अग्निहोत्री धर्मार्थ न्यास, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 12 मई, 2013 को 'वेदरत्न सम्मान' से भी सम्मानित किया था। चमनलाल जी ने बताया था कि उन्होंने सड़कों पर खड़े होकर प्रचार किया है। उन दिनों लोग आर्यसमाज के प्रचार को बड़े उत्साह से सुनते थे। उन्होंने कहा था कि वर्तमान समय में आर्यसमाज का प्रचार पहले के समान नहीं हो रहा। उनके अनुसार आर्यसमाज की स्थिति उनमें निराशा उत्पन्न कर रही थी। श्री चमनलाल रामपाल जी ने कहा था कि केन्द्र सरकार द्वारा कश्मीर से धारा 370 को हटाने का कार्य एक ऐतिहासिक कार्य था। उन्होंने हमें कहा था कि श्री नरेन्द्र मोदी का देश का प्रधानमंत्री बनना भी उन्हें एक दैवीय कार्य लगता था। देहरादून के डा. वेदप्रकाश गुप्त जी श्री चमनलाल रामपाल जी के अभिन्न मित्र रहे थे। आप दोनों आर्यसमाज के प्रचार व संगठन का कार्य उत्साह के साथ करते थे। डा. गुप्त जी ने अनेक गुरुकुल खोले हैं। उनका द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल सरकार से मान्यता प्राप्त है तथा यहां कई स्नातिकायें तैयार हुई हैं। आर्य विदुषी डा. अन्नपूर्णा जी इस गुरुकुल की आचार्या हैं। हमने श्री चमनलाल जी से उनकी इच्छायें भी पता कीं थी। उन्होंने इच्छा व्यक्त की थी कि देश के सभी विद्वान व नेताओं को मिलकर आर्यसमाज को जीवित करना चाहिये। वह चाहते थे कि आर्यसमाज का ऐसा प्रचार हो कि कोई मत-मतान्तर व उनके आचार्य आर्यसमाज की वैदिक मान्यताओं को अस्वीकार न कर सकें। उन्होंने कहा था कि हमें आर्यसमाज को सशक्त बनाने पर विचार व कार्य करना चाहिये।

श्री चमनलाल जी ने बताया था कि वह बचपन में एक बार गांधी जी से मूसरी में मिले थे। उन्होंने गांधी जी को कहा था कि उन्हें अंग्रेजों की नौकरी करना पसन्द नहीं है। इसके उत्तर में गांधी जी ने कहा था कि तुम वही काम करना जो तुम्हें ठीक लगे। नौकरी का त्याग करने का गांधी जी ने समर्थन नहीं किया था। वह बताते हैं कि उनको पांच मिनट का समय दिया गया था लेकिन एक मिनट बाद ही उनको आगे बात करने से मना कर दिया गया था। इसका कारण था कि नेहरु जी गांधी से मिलने आ रहे थे। यह बात उन्हें गांधीजी की निजी सचिव राजन्दिर कौर जी ने बताई थी।

श्री चमनलाल जी का यह सौभाग्य रहा कि माता संयोगिता जी ने जीवन भर उनका साथ दिया और उनकी सेवा की। यदि श्री चमनलाल जी को वृद्धावस्था में माताजी का साथ न मिलता तो आशंका थी कि वह निश्चित रूप से जीवन व्यतीत न कर पाते। यह ईश्वर की उन पर विशेष कृपा होना लगता है। दिनांक 16-10-2020 को हम जब उनसे मिले थे तो माता संयोगिता जी हमारे साथ लगभग तीन घंटों तक बैठी रही थी। उन दिनों श्री चमनलाल जी या तो लेटे रहते थे या कभी-कभी उठ कर बैठ जाते थे। हमने देखा था कि माता संयोगिता जी कुर्सी पर उनके पास ही बैठी रहकर उनसे बातें करती रहती थी। हमारे पूछने पर श्री चमनलाल जी ने अपने परिचारकों वा सेवकों के प्रति अपना सन्तोष व्यक्त किया था। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि माता संयोगिता जी दीर्घकाल तक स्वस्थ रहें। श्री चमनलाल जी की मृत्यु से आर्यसमाज की भारी क्षति हुई है। उनका जीवन एवं कार्य स्थानीय आर्यों के लिए प्रेरणादायक रहे हैं। हम ईश्वर से श्री चमनलाल रामपाल जी की आत्मा की सद्गति एवं शान्ति के लिए प्रार्थना करते हैं।

नशा नाश की निशानी : शराब तथा धूम्रपान

ऐ शराब पीने वालों!

शराबी को शराब कह रही है कि मेरा काम है जो मुझे पीयेगा, उसका सर्वनाश किये बिना नहीं छोड़ती, क्योंकि सर्वनाश करना मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। जितने भी धर्मशास्त्र हैं, उनमें सुरापान को महापापों की जड़ बताया गया है। यह मनुष्य को राक्षस बना देती है। यह नशे समाज और देश को नष्ट कर दते हैं और कर रहे हैं।

सुनिये – एक सज्जन से एक दुर्जन नशेबाज की वार्ता

सज्जन – हे शराबी, क्या आप माँस भी खाते हो ?

शराबी – हाँ, शराब और माँस दोनों पीता–खाता हूं।

सज्जन – क्या आप वेश्याओं के पास भी जाते हो ?

शराबी – हाँ, उनके साथ मिल के पीयें–खायें तो अच्छा लगता है।

सज्जन – वेश्याओं तो धन चाहती हैं, आप धन कहां से लाते हो ?

शराबी – मैं चोरी और जुआ खेलकर पैसा लाता हूं।

सज्जन – अच्छा, आप चोरी भी करते हो और जुआ भी खेलते हो ?

शराबी – हाँ, जो नष्ट होना चाहे उसका और काम ही क्या है।

किसी कवि ने कहा है –

मुल्कों–मुल्कों की सैर करना, यह तमाशा किताब में देखा।
दाम देकर जूतियां खाना, यह तमाशा शराब में देखा।।

जैन मत में शराब का निषेध

शराब के अधीन होकर मनुष्य तरह–तरह के निन्दनीय कर्म करता है। उसे इस लोक में भी अनेक दुख भोगने पड़ते हैं और परलोक में भी दुख भोगता है। शराबी की जेब में जो कुछ धन या वस्तु होती है, उसे दूसरे लोग ही छीनकर ले जाते हैं। होश आने पर उसे पाने के लिये इधर–उधर मारा–मारा ढूंढता फिरता है। शराब पीने से बुद्धि नष्ट हो जाती है।

शराब के विषय में महात्मा बुद्ध का सन्देश

1– हे मनुष्यो ! तुम सिंह के सामने जाते समय भयभीत न होना। वहां पराक्रम की परीक्षा है। तुम तलवार के नीचे सिर देने से भयभीत न होना – यह बलिदान की कसौटी है। तुम बढ़ती हुई ज्वालाओं से विचलित न होना – वह धैर्य की परीक्षा है। परंतु शरार से सदा भयभीत रहना – यह पाप और अनाचार की जननी है।

2– जिस राजा के राज्य में यह 'सुरा' आदर पाती है, वह राज्य शीघ्र ही नष्ट–भ्रष्ट हो जाता है। इतिहास में इस बात के कितने ही प्रमाण हैं। इस बुराई के कारण कई साम्राज्य मिट्टी में मिल गये। कृष्ण वंश की यादव जाति इसी बुराई के कारण नष्ट हुई। रोमन देश के पतन का मुख्य कारण यही पापिनी शराब ही थी। शराब से बढ़कर कोई ऐसी नशीली वस्तु नहीं है, जो मनुष्य के नाश में लगी हो। यह शराब तो जहर से भी बुरी है। जहर से तो शरीर मरता है परंतु

शराब से तो सारा परिवार उजड़ जाता है।

गुरु ग्रंथ साहब में गुरु नानकदेव जीने कहा है –

माड़ा नशा शराब दा, उतर जाये प्रभात।
नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, इस शराब को मत पीओ। इसके पीने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, पेट में विकार पैदा हो जाते हैं और अपने-पराये का ध्यान नहीं रहता। उनके तीर्थ स्नान, व्रत, उपवास सब नष्ट हो जाते हैं। इसके पीने वाले सब नरक में जाते हैं, नाली के कीड़े बनते हैं। इसलिये थोड़ा-सा बुद्धि से सोचिये और समझिये। क्या आप शराब पीने जा रहे हैं? यदि हाँ तो –

रूकिये और सोचिये –

1- वह कौन सी वस्तु है, जो शरीर, बुद्धि और आत्मा का विनाश कर देती है।?

2- वह कौन सी वस्तु है, जो दुराचार और अपराधों की जननी है?

3- वह कौन सी वस्तु है, जो मनुष्य को दोपाया पशु बना देती है और सुखी घर को नरक बना देती है। उनके बच्चे दाने-दाने को मोहताज हो जाते हैं और घरवाली जहर खाकर बच्चों सहित मर जाती है। अरे, कुछ तो विचारो! क्या इन नशों को छोड़कर तुम नेक इन्सान नहीं बन सकते?

याद रखिये –

बड़े पुण्य कर्मों के बदले में यह सुन्दर मनुष्य तन मिलता है, इसे नशों में पड़कर बरबाद मत करो। याद रखो, यह जीवन अनमोल है। इसे श्रेष्ठ चरित्र वाला बनाओ। आज ही प्रतिज्ञा करो, इन बुरे कर्मों को छोड़ने की और परमात्मा से प्रार्थना करो कि हे परमात्मा, हे पिता! मुझे इन पाप कर्मों से बचाओ।

न करो बरबाद जीवन को, ए नशों के दीवानों।
वही काटोगे तुम बुढ़ापे में, जो बोओगे जवानी में।।

शराब जान और माल, दोनों को लूटती है। याद रखिये – डाकू तो माल लेकर जान छोड़ देता है किंतु यह पिशाचिनी शराब तथा नशे जान और माल, दोनों को लूट लेते हैं और नशेबाज जल्दी ही मौत के घाट उतर जाते हैं। भाँग कहती है, हे गधे! तू मुझे क्यों नहीं खाता? गधा उत्तर देता है – हे भाँग! तेरे पीने से मनुष्य भी गधे बन जाते हैं। फिर गधे की क्या दशा होगी? हे नशा करने वालों, नशों से बाज आओ। मैं सत्य कहता हूँ कि नशे छोड़ो, मैं तुम्हें गरीब से अमीर बना दूंगा। नशे छोड़ो, मैं तुम्हें लखपति बना दूंगा। नशे छोड़ो, मैं तुम्हारी बुढ़ापे की पेन्शन बनवा दूंगा। जितने रूपये आप रोजाना नशों में खोते हो, माँस, अण्डे, शराब, अफीम, भाँग, सुल्फा, गांजा, हुक्का, बीड़ी, सिगरेट, गुटखे खाते में खर्च करते हो, उतने रूपये रोजाना बचाकर एक लोहे की गुल्लक या डिब्बे में डाल दिया करो और हर महीने में इन्हें निकाल कर डाकखाने में खाता खोलकर डाल दिया करो। कुछ ही वर्षों में आप लखपति बन जायेंगे। इसलिये सब मनुष्यों को इन सारे नशों का सर्वथा त्याग करके प्रतिज्ञा करनी चाहिये और अपने बचे हुए जीवन को अच्छे कार्यों में लगाना चाहिये। जिस ईश्वर ने इतना सुन्दर शरीर दिया है, उस ईश्वर की भक्ति में, उसकी उपासना में, जिसका नाम ओ३म् है, जो आपकी हर समय रक्षा करता है, उसका ध्यान करें। वेद, शास्त्र, उपनिषदों को, सत्यार्थप्रकाश को पढ़ें, जिससे आपका जीवन सुधरे।

पढ़िए, चिन्तन कीजिए, आचरण में उतारिए जीवन सफल हो जायेगा

- केवल सिंह आर्य, पानीपत

1. जिंदगी ऐसी बना, जिन्दा रहे दिलशाद तू।
जाए जब दुनिया से, दुनिया को याद आये तू।।

2. कबीरा जब हम पैदा हुए, जग हंसा हम रोए।
ऐसी करनी कर चलो, हम हंसे जग रोए।

3. जायेगा जब जहाँ से, कुछ भी ना पास होगा।
दो गज कफन का टुकड़ा, तेरा लिवास होगा।

4. मिलने की कोशिश करना, वादा ना करना, झूठ से बचना।
वादा अक्सर टूट जाता है, क्योंकि वश में नहीं अपने जमाना।

5. संसार के लोग हमें नहीं चाहते, हमसे चाहते हैं।
परमात्मा हमसे नहीं चाहते, हमें चाहते हैं।
हम आनन्द चाहते हैं, पर आनन्द देने वाले को नही चाहते ।
अर्थात उसकी नहीं मानते (वेदानुकूल जीवन नहीं जीते)

6. मन को ईश्वर में लगाये रखो, तन को शुभ कार्यों में लगाये रखो।
आपका जीवन सफल होता जायेगा।।

7. कर भला होगा भला, अन्त भले का भला।
जीवन में जीने की यही बस एक कला।

8. साँस-साँस में हो सिमरन तेरा,
यूँ ही बीत जाये प्रभु जीवन मेरा।

9. रहे भावना ऐसी मेरी, सदा सत्य व्यवहार करूं।
बने जहां तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूं।

10. मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों पर नित्य रहे।
दीन दु:खी जीवों पर मेरे, ऊर से करुणा स्त्रोत बहे।

11. एक दिन यह गलती हम भी करेंगे।
सब पैदल चलेंगे, हम कन्धे चढ़े चलेंगे।

12. मत कर इतनी मस्ती।
जिंदगी नहीं है सस्ती।

13. धर्म बिना धन अंधा है।
धन बिना धर्म लंगड़ा है।

14. अच्छा काम इच्छा न होते हुए भी करो।
बुरा काम इच्छा होते हुए भी मत करो।

ऋषियों का संदेश
(जीवन जीने की कला)

– दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ साबर कांठा, गुजरात

1. विषयों को भोगकर, इन्द्रियों की तृष्णा को समाप्त करने वाला तुम्हारा विचार ऐसा ही है, जैसा कि आग को बुझाने के लिये उसमें घी डालना।
2. ये बाते मानना तुम्हारा सबसे बड़ा अज्ञान है कि 'मैं कभी मरूंगा नहीं', 'यह शरीर बहुत पवित्र है', 'विषय भोगों में पूर्ण और स्थायी सुख है' तथा 'यह देह ही आत्मा है'।
3. तुम्हारे मन में अच्छे या बुरे विचार अपने आप नहीं आते। इन विचारों को तुम अपनी इच्छा से ही उत्पन्न करते हो, क्योंकि मन तो यन्त्र के समान जड़ वस्तु है, उसका चालक आत्मा है।
4. किसी के अच्छे या बुरे कर्म का फल तत्काल न प्राप्त होता देखकर तुम यह मत विचारो कि इन कर्मों का फल आगे नहीं मिलेगा। कर्म–फल से कोई भी नहीं बच सकता, क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ तथा न्यायकारी है।
5. सांर (प्रकृति), संसार को भोगने वाला (जीव) तथा संसार को बनाने वाले (ईश्वर) के वास्तविक स्वरूप को जानकर ही तुम्हारे समस्त दु:ख, भय, चिन्तायें समाप्त हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय नहीं है।
6. मनुष्य जीवन ईश्वर प्राप्ति के लिये मिला है। इस मुख्य लक्ष्य को छोड़कर अन्य किसी भी कार्य को प्राथमिकता मत दो, नहीं तो तुम्हारा जीवन चन्दन के वन को कोयला बनाकर नष्ट करने के समान ही है।
7. तुम्हारे जीवन की सफलता तो काम, क्रोध, मोह, अहंकारादि, अविद्या के कुसंस्कारों को नष्ट करने में ही है। यह समस्त दु:खों से छूटने का श्रेष्ठ उपाय है।
8. जब तक तुम संसार के सुखों के पीछे छिपे हुए दु:खों को समझ नहीं लोगे, तब तक वैराग्य उत्पन्न नहीं होगा। बिना वैराग्य के चंचल मन एकाग्र नहीं होगा, एकाग्रता के बिना समाधि नहीं लगेगी, समाधि के बिना ईश्वर का दर्शन नहीं होगा, बिना ईश्वर–दर्शन के अज्ञान का नाश नहीं होगा और अज्ञान का नाश हुए बिना दु:खों की समाप्ति और पूर्ण स्थायी सुख (मुक्ति) की प्राप्ति नहीं होगी।
9. तुम इस सत्य को समझ लो कि अज्ञानी मनुष्य ही जड़ वस्तुओं (भूमि, भवन, सोना, चाँदी आदि) तथा चेतन वस्तुओं (पति, पत्नी, पुत्र, मित्र आदि) को अपनी आत्मा का एक भाग मानकर, इनकी वृद्धि होने पर प्रसन्न तथा हानि होने पर दु:खी होता है।
10. तुम्हारे लोहे रूपी मन को, विषय भोग रूपी चुम्बक सदा अपनी ओर खींचता रहता है। ज्ञानी मनुष्य विषय भोगों से होने वाली हानियों का अनुमान लगाकर इनमें आसक्त नहीं होते, किंतु अज्ञानी मनुष्य इनमें फंसकर नष्ट हो जाते हैं।
11. महान ज्ञान, बल, आनन्द, आदि गुणों का भण्डार एक चेतन ईश्वर है, जो अनादि काल से तुम्हारे साथ है, न कभी वह अलग हुआ, न कभी अलग होगा। उसी संसार के बनाने वाले, पालन करने वाले, सबके रक्षक, निराकार की स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना सब मनुष्यों को सदा करनी चाहिये।

स्वस्थ–सुखी रहने के सूत्र

– केवल सिंह आर्य, पानीपत

1. अनावश्यक आराम छोड़ दो : शरीर को आवश्यकता से अधिक आराम मत दो। 6–7 घंटे आराम काफी है। इससे अधिक आराम करना डायबिटीज (शुगर) को जान–बूझ कर बुलावा देना है।
2. भविष्य में आने वाले बड़ों दु:खों से बचना है तो वर्तमान के छोटे–छोटे सुखों को छोड़ दो। अर्थात चार/पांच बजे बिस्तर छोड़कर दिनचर्या आरम्भ कर दो। आलस्य–वश बिस्तर पर पड़े रहना, भविष्य में बीमारी मोल लेने की तैयारी करना है। विद्वानों का कथन है : चार बजे के पीछे सोना, है इस जीवन को खोना, झट शैया को त्याग अमृत बरस रहा है।
3. प्रात: उठते ही बिना कुल्ला किये डेढ़–दो गिलास गुनगुना पानी बैठ कर घूंट–घूंट कर पीओ। इस से मुंह में जो लार है, जो रातभर बनी है, वह अधिकतम पेट में जायेगी, जो शरीर के लिये बहुत लाभकारी है।
4. 'भोजनांते विषं वारि' – भोजन करने के तुरंत बाद पानी पीना जहर पीना है। भोजन करने के डेढ़ घंटा बाद पानी पीओ। प्रकृति का नियम है, ज्यों ही आमाशय में भोजन जाना शुरू होता है, जठराग्नि प्रदीप्त हो जाती है जो भोजन को पचाती है। पानी पीने से वह अग्नि बुझ जाती है। जब भोजन पचेगा नहीं बल्कि सड़ेगा। भोजन पचने से रस, रक्त, माँस, अस्थि, मज्जा, वीर्य, ओज बनते हैं। भोजन सड़ने से गैस, अम्ल, पित्त, कफ बनते हैं।
5. भोजन करते समय भोजन का स्वाद मत देखो, भोजन की गुणवत्ता देखो। जीभ 6 इंच की है, शरीर 6 फीट का है।
6. दाँतों का काम आँतों से मत लो अर्थात भोजन को चबा–चबा कर खाओ।
7. बिना भूख भोजन मत करो। भूख लगने पर ही भोजन करो। भूख के लिये आयु के अनुसार शारीरिक श्रम अवश्यक करो।
8. यदि सुखी रहना है तो अच्छे काम इच्छा न होते हुए भी करो। बुरे काम इच्छा होते हुए भी मत करो।
9. तन को शुभ कर्मों में लगाये रखो, मन को ईश्वर में लगाये रखो। आपका जीवन सफल होता जायेगा।
10. योगाभ्यास (आसन, प्राणायाम) प्रतिदिन आधा घंटा कम से कम अवश्य करो। आसन करने से स्थूल शरीर मजबूत होताहै। प्राणायाम से सूक्ष्म शरीर मजबूत होता है। योग स्वस्थ व्यक्ति के लिये जीवन पद्धति है, रोगी के लिये उपचार पद्धति है। साधक के लिये साधना पद्धति है।
11. एलोपैथी (अंग्रेजी इलाज पद्धति) बीमारियों का सीमटोमैटिक इलाज करती है अर्थात बीमारी के सीमटम (लक्षण) मात्र खत्म करती है। योग तथा आयुर्वेद बीमारी का सिस्टेमैटिक अर्थात जिस कारण से रोग बनते हैं, उन कारणों को ही खत्म कर देती है।
12. जोड़ों के दर्द वाले मरीज बाय (वायु) वाले पदार्थ कम से कम खाएं। जैसे – चावल, राजमा, भिंडी, उड़द की दाल, अरबी आदि।
13. हल्दी, सोंठ, मैथी का प्रयोग करें। दूध पीते समय तीनों को फांकी के रूप में लें।
14. दर्द वाले स्थान पर तिल के तेल की मालिश करें। जिस अंग में दर्द है, उस अंग से सम्बंधित सूक्ष्म व्यायाम अवश्य करें।
15. भोजन में सलाद (मौसम के अनुसार) अवश्य लें। यदि भोजन ठीक से नहीं पचता तो गैस बनती है। यह गैस ही शरीर में फैल जाती है और सन्धि स्थानों में जमा हो जाती है। इससे जोड़ों में सूजन व दर्द होना शुरू हो जाता है।

MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बर्स बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर/फोर व्हीलर उद्योगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लॉट हैं – गुड़गाँव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

हमारे उत्पाद

- स्ट्रट्स/गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस/विन्डो बैलेन्सर्स

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गाँव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

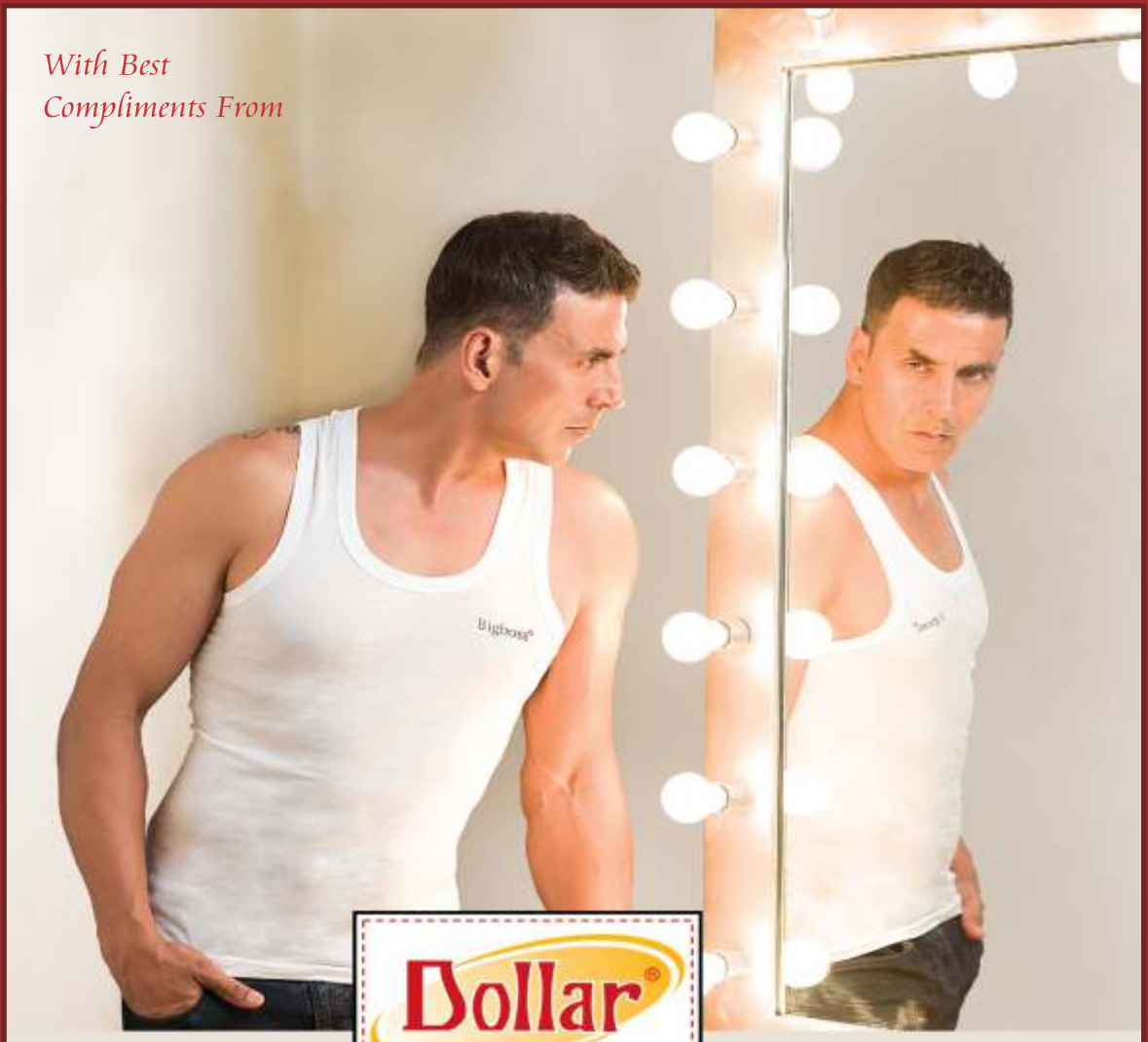

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।

संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री